संत श्री आसारामजी बापू द्वारा प्रेरित

ऋषि प्रसाद

हिन्दी

मूल्य : रु. ६/-
१ नवम्बर २००९
वर्ष : १९ अंक : ५
(निरंतर अंक : २०३)

परम पूज्य
संत श्री आसारामजी बापू

हे मानव ! तुम्हारे आत्मा-परमात्मा में कितना सामर्थ्य है तुम्हें पता नहीं। तुम्हारा सच्चिदानंद परमात्मा सत्ता, सामर्थ्य, सौंदर्य और आनंद से भरा है। उसकी प्रीति, स्मृति और उसमें विश्रांति पाकर निरहंकार, निर्मम, निर्दुःख हो जाओ।

ऋषि प्रसाद

मासिक पत्रिका

हिन्दी, गुजराती, मराठी, उड़िया, तेलगू, कन्नड़, अंग्रेजी व सिंधी भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : १९ अंक : ५
भाषा : हिन्दी (निरंतर अंक : २०३)
१ नवम्बर २००९ मूल्य : रु. ६-००
कार्तिक-मार्गशीर्ष वि.सं. २०६६

स्वामी : महिला उत्थान ट्रस्ट
प्रकाशक और मुद्रक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
प्रकाशन स्थल : महिला उत्थान ट्रस्ट, यू-१४, स्वस्तिक प्लाजा, नवरंगपुरा, सरदार पटेल पुतले के पास, अहमदाबाद- ३८०००९. गुजरात
मुद्रण स्थल : विनय प्रिंटिंग प्रेस, ''सुदर्शन'', मिठाखली अंडरब्रिज के पास, नवरंगपुरा, अहमदाबाद- ३८०००९. गुजरात
सम्पादक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे. खो. मकवाणा, श्रीनिवास

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित)

भारत में

(१) वार्षिक : रु. ६०/-
(२) द्विवार्षिक : रु. १००/-
(३) पंचवार्षिक : रु. २२५/-
(४) आजीवन : रु. ५००/-

नेपाल, भूटान व पाकिस्तान में

(सभी भाषाएँ)

(१) वार्षिक : रु. ३००/-
(२) द्विवार्षिक : रु. ६००/-
(३) पंचवार्षिक : रु. १५००/-

अन्य देशों में

(१) वार्षिक : US $ 20
(२) द्विवार्षिक : US $ 40
(३) पंचवार्षिक : US $ 80

ऋषि प्रसाद (अंग्रेजी)	वार्षिक	द्विवार्षिक	पंचवार्षिक
भारत में	७०	१३५	३२५
अन्य देशों में	US $ 20	US $ 40	US $ 80

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजा करें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर आश्रम की जिम्मेदारी नहीं रहेगी। अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ('ऋषि प्रसाद' के नाम अहमदाबाद में देय) द्वारा ही भेजने की कृपा करें।

संपर्क पता : 'ऋषि प्रसाद', श्री योग वेदांत सेवा समिति, संत श्री आसारामजी आश्रम, संत श्री आसारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात).
फोन नं. : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८, ६६११५५००.
e-mail : ashramindia@ashram.org
web-site : www.ashram.org

इस अंक में...

साजिशों का पर्दाफाश

भारतीय संस्कृति के कुप्रचार के लिए करोड़ों रुपये खर्चनेवाले देशद्रोहियों द्वारा पोषित एक गिरोह के द्वारा परम पूज्य संत श्री आसारामजी बापू एवं आश्रम के विरुद्ध लम्बे अर्से से चलायी जा रही षड्यंत्रों की प्रदीर्घ शृंखला का A2Z news चैनल पर पर्दाफाश हुआ। भारतीय संस्कृति के विश्वव्यापी प्रचार में तन-मन-धन से लगे हुए पूज्य बापूजी एवं आश्रम के विरुद्ध षड्यंत्र रचनेवाले संस्कृतिद्रोहियों की साजिशों की हकीकत का खुलासा एक स्टिंग ऑपरेशन में हुआ, जिसमें आश्रम से निकाले गये राजू लम्बू ने स्वयं अपने मुँह से अपनी एवं अपने गैंग की काली करतूतें खुफिया कैमरे के सामने बड़े मजे से बयान कीं।

राजू चांडक उर्फ राजू लम्बू अपने स्वेच्छाचार एवं अभद्र आचरण के कारण आश्रम से निकाले जाने के बाद द्वेष एवं ईर्ष्या से पीड़ित था, इसीसे उसने आश्रम के खिलाफ ऐसी भयंकर साजिश रची। इसको अंजाम देने के लिए वह सन् २००५ से ही खूब सोच-विचारकर एक-एक कदम आगे बढ़ा रहा था। अपनी मलिन मुरादों को अंजाम देने के लिए उसने आश्रम से निकाले गये लोगों को एकत्र कर एक गिरोह बनाया।

साजिशकर्ताओं का यह गैंग षड्यंत्रों को अंजाम देने हेतु अखबार, टीवी चैनल, वकील आदि का उपयोग करता था। यह गिरोह आश्रम को बार-बार धमकियाँ देकर आश्रम से पैसा ऐंठने की बदनीयत रखता था। अपने ये काले मंसूबे पूरे न होते देख इन्होंने हिन्दू धर्म विरोधी तत्त्वों से मिलकर पूज्य बापूजी के प्रति भक्तों की श्रद्धा तोड़ने के घिनौने प्रयासों की एक शृंखला ही शुरू कर दी। समाज में फैली बापूजी एवं आश्रम की प्रतिष्ठित छवि को धूमिल करने के लिए, आश्रम एवं गुरुकुलों को बदनाम करने के लिए तथा आश्रम पर झूठे मुकदमे दायर करने-करवाने के सिलसिलों को अंजाम देने के लिए इन्होंने मीडिया का भी बखूबी इस्तेमाल किया। अपनी इस मुहिम में मीडिया को हथकंडा बनाके उपयोग करनेवाला राजू कहता है : ''मीडिया तो बच्चा है। तुम जो कुछ उसे दो, वह उसे उछाल देगा। उसकी टी.आर.पी. बढ़ गयी, उसका तो काम हो गया !''

ऐसे अखबारों एवं चैनलों का सर्क्युलेशन एवं टी.आर.पी. घटना स्वाभाविक है। ऐसे शातिर लोगों को प्लेटफॉर्म देनेवाले अखबार एवं चैनल अभी तो अपनी आँखें खोल लें !

इनके इरादे इतने बदनीयत भरे हैं कि ये येन-केन प्रकारेण आश्रम के अस्तित्व को ही नेस्तनाबूद करने के हर सम्भव प्रयास में दिन-रात लगे हुए हैं। अपने इरादों को अंजाम देने के लिए पैसा भी पानी की तरह बहा रहे हैं।

राजू तो शातिर देशद्रोही गैंग का एक अंग मात्र है। इसके जैसे देश-धर्म-संस्कृति-समाजद्रोही साजिशकर्ताओं को काल्पनिक कहानियाँ बनाकर देनेवाले वे लोग कौन हैं ? अब उनसे न केवल गुजरात बल्कि पूरे देश की जनता सावधान हो चुकी है।

कुप्रचार अभियान का एक और मोहरा था चरित्रहीनता की सीमाएँ लाँघनेवाला वैद्य अमृत प्रजापति, जिसने अपनी इस गंदी मानसिकता

का परिचय देते हुए पूज्य बापूजी महाराज पर झूठे, मनगढ़ंत चारित्रिक आरोप लगाये । षड्यंत्र के तहत उसने एक बुरकाधारी महिला को मीडिया के सामने पेश कर पूज्यश्री पर बेबुनियाद, कपोलकल्पित आरोप लगवाये थे । परंतु बाद में पुलिस पूछताछ में उसने अपने ही मुँह से स्वीकार किया कि वह बुरकाधारी महिला कोई और नहीं बल्कि उसकी अपनी ही पत्नी थी। स्टिंग ऑपरेशन में राजू लम्बू के वक्तव्य से भी अमृत प्रजापति की पोल खुल जाती है ।

कुप्रचार अभियान के एक और मोहरे तथाकथित अघोरी की पोल खोलते हुए राजू ने खुफिया कैमरे के सामने कहा कि ''रात हुई तो तांत्रिक बाबे ने मेरे को बोला कि माता को भोग लगाने के लिए दारू चाहिए। पाँच दिन तक उसे दारू की बोतल दी और पूरा दिन सुबह से शाम तक बैठा रहा उसके पास। उसने (वासनापूर्ति के लिए) लड़की की माँग की।''

आगे उसने यह भी खुलासा किया कि उसने काले कपड़ेवाले उस तांत्रिक अघोरी को किसी पार्टी के द्वारा ४० हजार रुपये भी दिलवाये थे।

महेन्द्र चावला नामक शख्स को भी मोहरा बनाकर मीडिया में प्रसिद्धि दिलायी गयी थी एवं उसके द्वारा आश्रम व श्री नारायण साँईंजी पर झूठे आरोप लगवाये गये थे, यह उगलते हुए राजू लम्बू ने स्टिंग ऑपरेशन में सूत्रधार से कहा था कि ''हमने महेन्द्र चावला को करोड़ों का आदमी बना दिया है, पब्लिसिटी दिलवाके तुम्हें भी हम करोड़ों में खिलवा देंगे।''

साथ ही लम्बू ने खुफिया कैमरे के सामने अपने गैंग के मुख्य सदस्यों के नामों का भी खुलासा किया। दिनेश, महेन्द्र चावला, अविन वर्मा, वीणा चौहान, अमृत प्रजापति, देवेन्द्र आदि सभी समाजकंटकों से देशवासियों एवं साधकों को अत्यंत सावधान रहने की आवश्यकता है । ऐसे लोगों की जाँच होनी चाहिए एवं सत्य को समाज के सामने प्रकट किया जाना चाहिए ।

श्रद्धा तोड़ने के उनके षड्यंत्रों के बावजूद पूज्य बापूजी महाराज के सत्संगों में उमड़ती रिकार्ड-ब्रेक भीड़ षड्यंत्रकारियों को स्नेहभरी सलाह देती है कि ''अब तो समझो, अब तो सँभल जाओ।''

उल्लेखनीय है कि पंडित नेहरू के कंधे पर हाथ रखकर प्रयाग महाकुंभ पर्व की विशाल जनमेदनी की ओर अंगुलीनिर्देश करते हुए पं. मदनमोहन मालवीयजी उनसे बोले थे : ''नेहरू ! देखो, भारत एक धर्मप्रधान देश है। जो भारतवासियों की श्रद्धा को उखाड़ने की कोशिश करेगा, भारतवासी उसीको उखाड़कर फेंक देंगे।''

भारतवासी अन्य सब कुछ सह सकते हैं परंतु अपनी श्रद्धारूपी सम्पदा पर प्रहार कभी नहीं सह सकते । जिन्होंने भी यह कुप्रयास किया है उन्हें मुँह की खानी पड़ी है, जबकि भारतीय संस्कृति के संतों-महापुरुषों के प्रति देशवासियों की श्रद्धा अडिग ही रही है ।

सूरत (गुज.) के मुसलिम सोशल जर्नलिस्ट फारुख मोहम्मद ने लिखा है : **''मैंने देखा आश्रम में प्रेम, सेवा, भक्ति और शांति का संदेश दिया जाता है । हजारों को उल्लू बनाना भी मुश्किल है, यहाँ तो बापू ने तीन-चार करोड़ लोगों को अपना बनाया है !''** **- आर. सी. मिश्र**

संतों-महापुरुषों ने छेड़ दिया अभियान

भारतीय संस्कृति के कुप्रचार में लगे अखबारों एवं चैनलों के खिलाफ अभी देश के संतों-महापुरुषों ने अभियान छेड़ दिया है। भारतवासियों का आह्वान करते हुए वे कहते हैं :

महंत श्री रामस्वरूपदासजी महाराज, अध्यक्ष, अखिल भारतीय चतुस्सम्प्रदाय अखाड़ा परिषद : ''संत आसारामजी जैसे महान उपदेशक, जो इस विश्व को भारतीय संस्कृति का डिंडिमनाद करते हुए हमेशा सुनायी पड़ते हैं, आज उन्हीं आसारामजी के खिलाफ इस प्रकार का दुष्प्रचार हलकट अखबार और हलकट चैनल के माध्यम से क्यों किया जाने लगा, इसकी तह में जाना होगा। जितने भी सक्षम संत हैं, करीब-करीब उन्हींके ऊपर आरोप लगे हैं क्योंकि राष्ट्र को दिशा, राष्ट्र को गति इनके द्वारा ही प्राप्त होती है।

बंधुओ ! जिस दिन आपने मन में सोच लिया कि हमें भ्रष्ट चैनलों को नहीं देखना तो इनकी तो उसी दिन मौत हो जायेगी क्योंकि आपका देखना ही इनकी जिंदगी है।''

महंत हरिगिरिजी महाराज, महामंत्री, अखाड़ा परिषद : ''आज मीडिया में कुछ लोग ऐसे नजर आते हैं जो बहुत स्वार्थी हैं। मीडिया को विदेशी ताकतों का हथकंडा न बनकर निष्पक्ष रहना चाहिए।''

महामंडलेश्वर श्री सुनील शास्त्रीजी : ''मीडिया को माध्यम बनाकर भारत की संस्कृति को गाली क्यों दी जा रही है ? जो चैनल आसारामजी बापू या भारतीय संस्कृति के विरुद्ध दिखाते हैं, ऐसे चैनलों को बहिष्कृत कर दिया जाय। ऐसे विदेशी हथकंडों के मुँह पर थूकना चाहिए। महिलाओं की चप्पलों से उनके मुँह का स्वागत होना चाहिए।'' ❐

शिष्य के गुण

प्रश्न : योग्य शिष्य के लक्षण क्या हैं ?

उत्तर : वह गुरु में तन्मय हो जाता है। गुरु के अनुरूप हो जाना यही गुण है। वह अपने सर्व अंगों में गुरु को स्थापित कर गुरुरूप ही बन जाता है। गुरु में जितनी शक्ति, सिद्धि, प्राप्ति है उसमें उतनी पूरी अपने-आप आ जाती है। वह गुरुआज्ञा में पूरा होता है। 'गीता' में अर्जुन कहता है : **'करिष्ये वचनं तव।'** गुरु जो बोलें वैसा करना ही चाहिए। 'क्यों बोले ?' यह सोचना भी नहीं। 'करना या नहीं करना ?' यह विचार भी मन में नहीं उठना चाहिए। जीवन में अशास्त्रीय कुछ करने के लिए गुरु बोलेंगे भी नहीं, जिससे जीवन दुःखी हो। मुख्यतः गुरु के साथ तन्मयता, अनुरूपता और गुरुभाव - ये योग्य शिष्य के गुण अथवा लक्षण हैं।

स्वाध्याय

नीचे दिये गये रिक्त स्थानों के उत्तर खोजने हेतु 'ऋषि प्रसाद' के इस अंक को ध्यानपूर्वक पढ़िये।

(१) .... सम्पूर्ण समस्याओं का निराकरण करनेवाला एक अद्‌भुत ग्रंथ है।

(२) वह बड़ा सरल मंत्र है - ....।

(३) .... वाणी दूसरों को आनंद, शांति और प्रेम का दान करती है।

(४) सब लोग ऐसे .... को चाहते हैं एवं उनकी बात मानते हैं।

(५) जगत को ...... मानो, आत्मा को ...... मानो।

ईश्वर दयालु हैं या न्यायकारी ?

(पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)

जो व्यक्ति दयालु होता है वह ठीक से न्याय नहीं कर सकता और जो न्यायप्रिय होता है वह दया नहीं कर सकता । तब कई बार मन में होता है कि भगवान दयालु हैं कि न्यायकारी ? अगर दयालु हैं तो पापी पर भी दया करके उसको माफ कर देना चाहिए । न्यायाधीश दया करेगा तो सजा नहीं देगा, वह तो दयावश बोलेगा : 'छोड़ दो बेचारे को ।' अगर भगवान न्यायकारी हैं और हमारे कर्मों का ही फल हमको देते हैं तो फिर हम उनकी भक्ति क्यों करें ? अगर भगवान दया नहीं कर सकते तो हम उनका भजन क्यों करें ? और भगवान यदि न्याय नहीं कर सकते तो अन्यायी हमारा क्या भला करेगा ? अगर हमारा भला करेगा तो दूसरे का बुरा होगा। अगर सजा देते हैं तो वे दयालु नहीं हैं । तो बताओ भगवान दया करते हैं कि न्याय करते हैं ?

सच तो यह है कि भगवान दया भी करते हैं और न्याय भी करते हैं । यह कैसे हो सकता है ? जो दया करेगा वह न्याय में कहीं-न-कहीं छूटछाट ले लेगा और जो न्याय करेगा वह दया में छूटछाट लेगा । तो क्या भगवान छूटछाटवाले हैं ?

भगवान न्यायकारी हैं, ऐसा मानोगे तो कर्म सिद्धांतवाले आपकी पीठ ठोकेंगे कि ठीक समझे -

करम प्रधान बिस्व करि राखा ।
जो जस करइ सो तस फलु चाखा ॥

(श्री रामचरित. अयो.कां. : २१८.२)

और दयाप्रियवाले पक्ष में बैठोगे तो भक्त आपकी पीठ ठोकेंगे ।

अपि चेदसि पापेभ्यः सर्वेभ्यः पापकृत्तमः ।
सर्वं ज्ञानप्लवेनैव वृजिनं संतरिष्यसि ॥

'यदि तू अन्य सब पापियों से भी अधिक पाप करनेवाला है तो भी तू ज्ञानरूप नौका द्वारा निःसंदेह सम्पूर्ण पाप-समुद्र से भलीभाँति तर जायेगा ।' (गीता : ४.३६)

भाई देखो, एक कर्म-सिद्धांत होता है, दूसरा भगवदीय सिद्धांत होता है । जो पापकर्म करते हैं और पाप को पाप नहीं मानते, ऐसे लोगों के लिए भगवान न्यायकारी हैं । जो एकदम अड़ियल होते हैं, गलती को ढकने के लिए तर्क देते हैं उनको तो न जाने कितनी कँटीले वृक्षों की योनियों में, सुअर की, भैंसे की योनि में जा-जाकर डण्डे खाने पड़ेंगे, तब कहीं उनका कल्याण होगा । ऐसे लोगों के लिए भगवान न्यायकारी हैं, उनको दण्ड देकर उनका भला करते हैं । अपराधी व्यक्ति के साथ तो न्याय किया जाय, दण्ड दिया जाय ताकि वह अपराध से बचे । अपराधी पर दया करके छोड़ दोगे तो वह अपराध से नहीं बचेगा । इसीलिए अपराधी के साथ न्याय किया जाता है लेकिन जो पाप को पाप मानते हैं, गलती को गलती मानते हैं प्रायश्चित्त करके छटपटाते हैं और भगवान की शरण जाते हैं उन पर भगवान दया करते हैं । जैसे आपने बदपरहेजी की, गलती करने से बीमार हुए और वैद्य के पास गये तो वैद्य आपको सजा नहीं देता, आपका उपचार करके बीमारी मिटाकर आपको तंदुरुस्त कर देता है, ऐसे ही भगवान हमारी बुद्धि के, हमारे कर्मों के दोष मिटाकर हमें शुद्ध करते हैं यह भगवान की दया है ।

एक होते हैं अपराधी वृत्ति के व्यक्ति और दूसरे होते हैं रुग्ण वृत्ति के व्यक्ति । अपराधी के साथ न्याय किया जाता है और रुग्ण पर दया की जाती है क्योंकि जो रोगी है, लाचार है उसको सहानुभूति की जरूरत है ।

माँ अति उद्दण्ड बच्चे को दण्ड देती है, यह माँ की कृपा है और दूसरा बच्चा जो स्नेह का पात्र है उस पर दया करती है, उसे खिलाती-पिलाती है, दुलार करती है । माँ तो दोनों का मंगल चाहती है । ऐसे ही भगवान माताओं की माता और पिताओं के पिता हैं, भगवान हमारा मंगल ही चाहते हैं । भगवान न्याय भी करते हैं और दया भी करते हैं । भगवान न्यायकारी हैं यह एक पक्ष हो गया और दयालु हैं यह दूसरा पक्ष हो गया लेकिन वास्तव में भगवान प्राणिमात्र के परम सुहृद हैं । भगवान के वचन हैं :

सुहृदं सर्वभूतानां ज्ञात्वा मां शान्तिमृच्छति ।

'मेरा भक्त मुझको सम्पूर्ण भूत-प्राणियों का सुहृद अर्थात् स्वार्थरहित दयालु और प्रेमी, ऐसा तत्त्व से जानकर शांति को प्राप्त होता है ।'

(गीता : ५.२९)

यह अपनी कमजोरी है कि न चाहने पर भी काम-विकार में गिर जाते हैं, न चाहने पर भी क्रोध आ जाता है, न चाहने पर भी लोभ में फँस जाते हैं और पुरानी आदतों में फिसल जाते हैं । यदि वे आदतें खटकती हैं तो आप भगवान को पुकारो : 'हे अच्युत ! हे गोविंद ! हे अनंत ! माधव !...' वे आपकी मदद करेंगे क्योंकि भगवान दयालु हैं । भगवान का नाम और सत्संग ये दो साधन हैं, ये आपके ऊपर दया की वृष्टि करा देंगे । यदि वे आदतें आपको नहीं खटकती हैं और आप भगवान को मानते ही नहीं हैं तो न्यायकारी भगवान का दण्डचक्र घूमेगा । दण्ड आकर पाप का फल भुगताकर चला जायेगा, दया आकर पुण्य का फल देकर चली जायेगी लेकिन भगवान उतने ही नहीं हैं, भगवान प्राणिमात्र के परम सुहृद हैं ।

एक बात खास याद रखना कि भगवान ने आपको खुशामदखोर बनने के लिए धरती पर जन्म नहीं दिया है । यह वहम घुस गया है कि हम जरा भगवान की पूजा करें, खुशामद करें तो भगवान खुश होंगे, जैसे अफसर की, नेता की खुशामद करके लोग अपना काम बनाते हैं । इस प्रकार की मानसिकता बहुत तुच्छ है । भगवान आपको दास बनाकर, खुशामद कराके आपका भला करनेवालों में से नहीं हैं । भगवान ने आपको खुशामदखोरी के लिए पैदा नहीं किया है, आपको अपने स्वरूप का अमृत देने के लिए पैदा किया है । भगवान ने आपको अपना दोस्त बनाने के लिए पैदा किया है ।

तस्माद्योगी भवार्जुन । (गीता : ६.४६)

'इसलिए तू योगी हो' अर्थात् मेरे से योग कर, मेरे से मिल । गुलाम को मिलाया जाता है क्या ? नहीं... अपने से सजातीय को मिलाया जाता है । (जीव और ईश्वर की जाति एक है ।)

ईस्वर अंस जीव अबिनासी ।
चेतन अमल सहज सुख रासी ॥

अतः भगवान सुहृद भी हैं । जो अपनी गलती को ढूँढ़ता है, स्वीकारता है और निकालने का प्रयास करता है, उस पर भगवान की दया होती है । जो अपने अपराध को मानता है, पश्चात्ताप करता है और प्रायश्चित्त के लिए छटपटाता है उस पर भी भगवान दया करते हैं । जो अपने अपराध को अपराध नहीं मानता, भूल को भूल नहीं मानता, उसके लिए भगवान न्यायकारी हो जाते हैं । गलतियाँ करोगे तो भगवान हृदय की धड़कनें बढ़ा देंगे । अगर प्रायश्चित्त करोगे और मार्गदर्शन माँगोगे तो निर्भयता मिलेगी । अतः भगवान दयालु भी हैं, न्यायप्रिय भी हैं और परम सुहृद भी हैं । ❑

गीता सम नहीं ग्रंथ

(गीता जयंती : २८ नवम्बर)

(पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)

'भगवद्गीता' सम्पूर्ण समस्याओं का निराकरण करनेवाला एक अद्भुत ग्रंथ है । यह परब्रह्म परमात्मा के गम्भीर ज्ञान का महासिंधु है, भगवान के अनुभव की पोथी है । गीता जीवनग्रंथ है, ज्ञानग्रंथ है, विजयग्रंथ है, उत्तम मनोवैज्ञानिकता का दिग्दर्शक ग्रंथ है । यह एक रचनात्मक विश्वशास्त्र है, एक कौशल्य-कलाप्रदायक शास्त्र है ।

गीता योगियों के लिए योगशास्त्र, दार्शनिकों के लिए दर्शनशास्त्र, ज्योतिर्विदों के लिए ज्योतिषशास्त्र, विज्ञों के लिए विज्ञान, नीतिज्ञों के लिए नीतिज्ञान और साधुओं के लिए मोक्षप्रदायक ज्ञान से सम्पन्न है । यह कर्मी के लिए कर्मयोग, ज्ञानी के लिए ज्ञानयोग, भक्त के लिए भक्तियोग, विद्यार्थी के लिए सदाचार तथा गृहस्थी के लिए शिष्टाचार के ज्ञान से भरपूर है । इसके अतिरिक्त गीता में अनेक विद्याएँ हैं, जैसे शोक-निवृत्ति की विद्या, कर्तव्य-कर्म करने की विद्या, त्याग की विद्या, पाप न लगने की विद्या, भोजन करने की विद्या, विषय-सेवन की विद्या, भगवान को अर्पण करने की विद्या, दान देने की विद्या, यज्ञ करने की विद्या, कर्मों को सत् बनाने की विद्या, पूजन की विद्या, समता लाने की विद्या आदि ।

गीता में श्लोक होते हुए भी यह भगवान की वाणी होने से इन्हें 'मंत्र' तथा गहरा अर्थ छुपा होने से इन्हें 'सूत्र' भी कहा जा सकता है । शास्त्रों में कहा गया है :

गीतायाः श्लोकपाठेन गोविन्दस्मृतिकीर्तनात् ।
साधुदर्शनमात्रेण तीर्थकोटिफलं लभेत् ॥

'गीता के श्लोक के पाठ से, भगवान के स्मरण और कीर्तन से तथा आत्मतत्त्व में विश्रांति प्राप्त संत के दर्शनमात्र से करोड़ों तीर्थ करने का फल प्राप्त होता है ।'

हमारे जीवन में गीता का मूल्य आज भी समस्त ग्रंथों में सर्वोच्च बना हुआ है ।

हरि सम जग कछु वस्तु नहीं, प्रेम पंथ सम पंथ ।
सद्गुरु सम सज्जन नहीं, गीता सम नहीं ग्रंथ ॥

जग में हरि के समान अन्य कोई वस्तु नहीं है, परमात्मप्रेम के समान सुगम कोई पंथ नहीं है, सद्गुरु के समान मनुष्य का दुनिया में कोई हितैषी नहीं है और गीता जैसा महान कोई ग्रंथ नहीं है । इस छोटे-से ग्रंथ में जीवन की गहराइयों को छूते हुए सत्य व ज्ञानयुक्त ऐसे महान विचारों का समावेश है, जिनके नित्य अध्ययन व चिंतन से मानवमात्र की निराशा, हताशा एवं दुश्चिंताएँ सरलता से मिट जाती हैं तथा मानव में से महेश्वर का प्रादुर्भाव हो जाता है । वे लोग बड़े धनभागी हैं जिन्हें गीताज्ञान-सम्पन्न किन्हीं महापुरुष का प्रत्यक्ष सान्निध्य प्राप्त है और उनके वचनों में जिनकी श्रद्धा है । ऐसे लोग देर-सवेर अपना जीवन समुन्नत कर ही लेते हैं ।

भगवद्गीता ऐसे दिव्य ज्ञान से भरपूर है कि इसके अमृतपान से मनुष्य के जीवन में साहस, हिम्मत, समता, सहजता, स्नेह, शांति और दैवी सम्पदा के गुण विकसित हो उठते हैं तथा अधर्म और शोषण का मुकाबला करने का सामर्थ्य आ जाता है ।

गीता ऐसा धर्म बताती है जो केवल यज्ञकुण्ड पर या मंदिर, मसजिद, गिरजाघर या और किसी जगह पर जाकर सम्पन्न हो ऐसी बात नहीं, चालू व्यवहार में वह सम्पन्न हो सकता है । चालू व्यवहार में तुम्हारी आध्यात्मिक उन्नति करने की व्यवस्था 'गीता' ग्रंथ बताता है ।

अगर विघ्न-बाधा एवं संघर्षों के बीच जीते-जी निर्लिप्तता, जीते-जी मुक्ति पानी हो तो गीता का, भागवत का ज्ञान है। गीता एक ऐसा दर्शनशास्त्र है जो जीव को उसके वास्तविक स्वरूप का दर्शन कराता है।

विनोबाजी भावे कहते हैं : ''गीता के आधार पर अकेला मनुष्य सारी दुनिया का मुकाबला कर सकता है।''

गीता का परम लक्ष्य है मानवमात्र का कल्याण करना। किसी व्यक्ति, वस्तु, परिस्थिति के प्रभाव में आकर मनुष्य ईश्वरप्राप्ति से वंचित न रह जाय क्योंकि ईश्वर की प्राप्ति ही मनुष्य-जीवन का परम उद्देश्य है। भ्रमवश मनुष्य भौतिक सुख-सुविधाओं के वशीभूत होकर नाना प्रकार से अपनी इन्द्रियों को तृप्त करने के प्रयासों में उलझ जाता है। फलस्वरूप दुःखों के सिवाय उसे अन्य कुछ प्राप्त नहीं होता। इस दुःखालय संसार में सुख ढूँढ़ता है, कितनी विडम्बना है ! जितना-जितना दुःखालय संसार से सुख चाहता है उतना ही गहरा दुःख में गिरता जाता है। गीता इस भ्रम-भेद को मिटाकर अत्यधिक सरल, सहज, सुखमय व सर्वोच्च ज्ञानसंयुक्त जीवन-पथ दर्शाती है। गीता के सुवचनों का आचमन करने से मनुष्य को भोग व मोक्ष दोनों की ही प्राप्ति होती है। किसी मरणासन्न व्यक्ति के निकट बैठकर उसे गीता का श्रवण कराया जाय तो मरणोपरांत उसकी सद्गति होती है।

अतः प्रत्येक विद्यार्थी को गीता के श्लोक कंठस्थ करने चाहिए एवं उनके अर्थ में गोता लगाकर अपने जीवन को ओजस्वी-तेजस्वी बनाना चाहिए। गीता मानवमात्र के लिए उपयोगी व हितकारी है, चाहे वह किसी भी देश, वेश, समुदाय, सम्प्रदाय, जाति, वर्ण व आश्रम का व्यक्ति ही क्यों न हो ! यदि वह इसका थोड़ा-सा भी नियमित पठन-पाठन करे तो भी उसे अनेक आश्चर्यजनक लाभ मिलने लगते हैं।

मेरे गुरुदेव परम पूज्य स्वामी श्री लीलाशाहजी महाराज तो गीता की प्रशंसा करते हुए कहते थे कि ''जीवन के सर्वांगीण विकास के लिए गीता ग्रंथ अद्भुत है। इस ग्रंथ में किसी भी देश, जाति के तमाम मनुष्यों के कल्याण की अलौकिक सामग्री भरी हुई है। अतः हम सबको गीता-ज्ञान में स्नान करना चाहिए। भोग, मोक्ष, निर्लेपता, निर्भयता आदि तमाम दिव्य गुणों का विकास करनेवाला यह गीता ग्रंथ विश्व में अद्वितीय है।''

गीता-जयंती के अवसर पर हमें संकल्प लेना है कि हम समाज में पुनः गीता के महत्त्व एवं ज्ञान का प्रचार-प्रसार करेंगे। हम स्वयं यथाशक्ति गीता के श्लोकों को अर्थसहित याद करेंगे। ब्रह्मनिष्ठ महापुरुषों द्वारा गीता के श्लोकों की की हुई व्याख्या सुनेंगे-पढ़ेंगे एवं उनका प्रचार-प्रसार करेंगे। गीता-जयंती के पावन अवसर पर विद्यार्थियों में गीता-श्लोक स्मरण एवं लेखन प्रतियोगिताएँ आयोजित करवायी जा सकती हैं।

सम्पूर्ण विश्व में गीता ही एकमात्र ऐसा सद्ग्रंथ है, जिसकी जयंती मनायी जाती है। यदि हमें अपनी संस्कृति को जीवित रखना है, सुसंस्कारों द्वारा जन-जन में राष्ट्रीयता की भावना का संचार करना है तो गीता जयंती जैसे पर्वों-उत्सवों को सर्वत्र हर्षोल्लास के साथ मनाया जाना चाहिए।

विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम में, अभिनय द्वारा, घरों में कथा-कहानियों द्वारा तथा समाज में गीतों के द्वारा पर्वों के महत्त्व को समझाया जाय। इससे पाश्चात्य देशों की दूषित विचारधारा के दीवाने बनते जा रहे हमारी संस्कृति के लाड़ले नौनिहाल पुनः भारत के शास्त्र, संत व संस्कृति के उत्कृष्ट सिद्धांतों का लाभ लेकर विश्वशांति व विश्व-मांगल्य के दैवी कार्यों में अधिक-से-अधिक संख्या में सहभागी होंगे।

हर बाल संस्कार केन्द्र में केन्द्र-शिक्षक श्री गीताजी का पाठ करें व बच्चों द्वारा करायें। श्री गीताजी का पाठ करने से पहले उनका माहात्म्य पढ़ें। इस प्रकार श्री गीता जयंती मनायें। श्री गीताजी का प्रचार-प्रसार बढ़ायें। ❑

भक्तकवि संत पुरंदरदासजी

विजयनगर के महाराज कृष्णदेव राय का समकालीन श्रीनिवास नायक नाम का एक सेठ था, जो रत्नों का व्यापार करता था। उसके पास एक ब्राह्मण आया और बोला : ''सेठजी ! मैंने अपनी कन्या की मँगनी कर दी है लेकिन अब शादी करने के लिए धन की जरूरत है इसीलिए आप जैसे सेठ के पास आया हूँ। आपके सिवाय मेरा कोई सहारा नहीं।''

सेठ : ''क्या ! तेरी कन्या की शादी का हमने ठेका लिया है ! हम एक पैसा भी नहीं देंगे।''

अब उस ब्राह्मण ने सोचा कि क्या करूँ ? उसने देखा कि सेठ की पत्नी भगवान को मानती है और वह जानती है कि अंत में दुनिया से कुछ ले नहीं जाना है इसलिए सत्कर्म करना चाहिए। वह ब्राह्मण श्रीनिवास की पत्नी के पास गया।

बाई ने सोचा कि 'मैं पति से माँगूँगी... नहीं-नहीं, वे तो देंगे नहीं। बेचारे ब्राह्मण का कार्य कैसे होगा ?' सेठ श्रीनिवास की पत्नी ने अपनी कीमती नथनी ब्राह्मण को दे दी और बोली : ''इसको गिरवी रखके अपनी कन्या की शादी के लिए सामान ले लेना।''

ब्राह्मण ने देखा कि ऐसा कीमती नग कौन लेगा ? वह गया श्रीनिवास सेठ के पास और बोला : ''सेठजी ! यह नथनी आप ले लो और मेरे को पैसा दे दो जितना दे सकते हैं।''

सेठ ने नथनी देखी और मन-ही-मन सोचने लगा कि 'इतना कीमती नग ! इस कंगले ब्राह्मण को किसने दिया होगा ?' उसने खूब जाँचा-परखा और बोला : ''अरे, ब्राह्मण ! तुम कल आना। कल मैं इस पर तुमको पैसे दूँगा।''

सेठ ने नथनी को तिजोरी के अंदर के खाने में डाला और उसकी चाबी अपने पास रख ली। फिर तिजोरी का बाहर का ताला भी लगाया और घर गया। पत्नी को बुलाकर पूछा : ''तेरी वह कीमती नथनी कहाँ है जो तू कभी-कभी पहनती थी ?''

वह समझ गयी कि 'अब कुछ बोलूँगी तो मेरी क्या हालत होगी !' सोचने लगी, 'क्या करूँ ?'

वह हड़बड़ाती हुई बोली : ''अंदर पड़ी है।''

''अंदर कहाँ पड़ी है ?''

वह समझ गयी कि 'अब मुझे ये नहीं छोड़ेंगे। पतिदेव इतने कंजूस हैं कि अब उस नग के चक्कर में मेरे ये अंग न जाने कैसे हो जायेंगे ?'

उसने कटोरी में जहर घोल दिया। भगवान के सामने आकर बोली कि 'माधव ! अब मैं तेरे चरणों में समर्पित होने के लिए यह विष पान करूँगी। दूसरा कोई चारा ही नहीं है माधव ! तुम सर्वसमर्थ हो और मैं साधारण महिला हूँ। तुम ही मेरी रक्षा करो। और एक काम करना प्रभु ! मेरे पतिदेव को अपनी भक्ति का दान दे दो। मैं तो तुम्हारे चरणों में समा जाऊँ। क्या करूँ, विष पिये बिना छुटकारा नहीं है। जो तुम्हारी मर्जी हो देव !' आर्तभाव से प्रार्थना और फिर चुप्पी... परमात्मदेव तो व्यापक है, सब जगह पर है, सर्वसमर्थ है। उस परमात्मा की सत्ता ने क्या लीला की ! ज्यों कटोरी नजदीक आती है मुँह के, धड़ाक-से उसमें वह नथनी गिर पड़ी !

'यह क्या हुआ ?' बाहर निकाला तो वही नथनी।

'भगवान ! तू सृष्टिकर्ता है, पालनकर्ता है, संहारकर्ता है यह तो सुना था लेकिन आज तेरी

अद्भुत लीला मुझे प्रत्यक्ष देखने को मिली !...' अब उसका हृदय कैसा हुआ होगा, श्रीनिवास की पत्नी ही जाने। अपने प्रेमभरे, धन्यवादभरे आँसू पोंछती जा रही है और भगवान को धन्यवाद देती जा रही है : 'जो लोग अपने को अनाथ मानते हैं, असहाय मानते हैं वे बड़ी गलती करते हैं। माधव ! तू सर्व का नाथ, सर्व के सदा साथ है। मुझे भी मालूम नहीं था, मैं तो प्राण अर्पण कर रही थी प्राणनाथ के चरणों में लेकिन तू प्राण बचाना चाहता था। तूने नथनी लाकर कटोरी में डाल दी। मैंने तो प्रार्थना की थी कि मुझे अपने चरणों में रख ले। पतिदेव के द्वारा डाँट-फटकार और क्या-क्या होगा ! लेकिन देव तू !...'

बस, ऐसा करते-करते वह भाव-समाधि के आनंद में मग्न हो गयी। भरे दिल से ईश्वर से एकाकारता करते-करते जो शांति मिलती है, जो आनंद मिलता है, जो माधुर्य मिलता है वह कोई भक्त ही जाने ! शांति से भरा हुआ दिल, धन्यवाद और प्रेमाश्रुओं से भरे हुए नेत्र ! उसने पति को कहा : ''लो, यह नथनी पतिदेव !''

''क्या ! यह नथनी... यह तो तेरी है ! तो मेरे पास आयी वह किसकी है ?''

सेठ तुरंत अपनी दुकान की ओर भागा। दुकान पास में ही थी। तिजोरी का मुख्य दरवाजा खोला। अंदर का चोर दरवाजा खोला। देखा कि नथनी गायब !

'अरे ! इतना छुपाके रखी थी तब भी कैसे पत्नी के पास पहुँच गयी ? मैं कंजूस इस मिथ्या संसार को सत्य मानता हूँ, मरनेवाले तन को सत्य मानता हूँ लेकिन तुझ अमर की महिमा को मैं नहीं जानता था। हाय माधव ! हाय प्रभु ! हे दीनदयाल ! भक्तवत्सल !' श्रीनिवास, सेठ श्रीनिवास नहीं रहा, भगवद्निवास हो गया। उसने ढिंढोरा पिटवा दिया : 'जिसको जो कुछ चाहिए श्रीनिवास के घर से, दुकान से अपनी आवश्यकताएँ पूरी करो ! ले लो ! ले लो ! ले लो !'

इकट्ठा करने में तो जिंदगी पूरी हो जाती है, छोड़ने में क्या देर लगती है ? आप प्राण छोड़ देंगे तो सब छूट जायेगा, यह भी पक्की बात है। श्रीनिवास ने तो छोड़ा, आप नहीं छोड़ोगे ऐसी बात नहीं है, आप भी छोड़ोगे। श्रीनिवास ने भगवान के लिए छोड़ा और दूसरे लोग छोड़ते हैं मजबूरी के कारण। मर गये तो छूट गया ! छोड़े बिना कोई रहेगा ? छूटे बिना रहेगा ? कंगले-से-कंगला आदमी भी कुछ-न-कुछ छोड़के ही जाता है। सब छूट जाय उससे पहले सब जिसका है उसमें थोड़ा शांत होना सीखें। भगवान के लिए तड़पें अथवा भगवान को अपना मानकर उससे एकाकार हों।

श्रीनिवास सब कुछ लुटाके साधु बन गये। चार बच्चों एवं पत्नी को लेके संत व्यासरायजी के आश्रम में गये कि ''महाराज ! आपने जो पाया है, वह आत्म-अमृत हमें भी मिले।''

श्रीनिवास की भक्ति देखकर गुरु व्यासरायजी ने उनका नाम रख दिया 'पुरंदर विट्ठल'। वही श्रीनिवास पुरंदरदास बन गये और भगवान पुंडरीकाक्ष की भक्ति में ऐसे लगे कि उनका जीवन धन्य हो गया।

पुरंदरदासजी भिक्षा माँगने जाते थे। झोली में जो भी रूखा-सूखा मिलता, वह अकेले नहीं खाते थे। अपने से भी जो गरीब-गुरबे मिलते, उनको बाँटके फिर अपने हिस्से का रखते। कल के लिए संग्रह नहीं करते। उनके चारों पुत्र एवं पत्नी ये सभी भगवान की भक्ति में मग्न रहते थे।

पुरंदरदासजी की ख्याति दिनोंदिन बढ़ने लगी, लोग उनकी भजन-मण्डली में अधिकाधिक संख्या में एकत्र होने लगे। एक ओर जहाँ संत का दर्शन करके, उनका सत्संग-सान्निध्य पाकर आनंदित एवं लाभान्वित होनेवाले पुण्यात्मा समाज में होते हैं, वहीं दूसरी ओर उनका यश देखकर जलनेवाले पामर निंदक भी होते हैं। समाज को

कुटिल स्वार्थी तत्त्वों से सावधान करनेवाले प्रत्येक लोकसंत के साथ आज तक जो होता आया है वही इन लोकसंत के साथ भी हुआ। कुछ अधम लोग उनकी लोकप्रियता देखकर ईर्ष्यावश उन्हें परेशान करने लगे। इससे उनकी लोकप्रियता कम नहीं हुई बल्कि और भी अधिक बढ़ गयी, क्योंकि लोग उनसे, उनकी आध्यात्मिकता से परिचित थे।

पुरंदरदासजी के भक्तिमय गीत जनता में बहुत प्रसिद्ध हुए और घर-घर गाये जाने लगे। कुछ लोग उनके गीतों की पूजा उपनिषद् आदि पवित्र ग्रंथों की तरह करने लगे। अब तो हर प्रकार से विफल एवं समाज द्वारा तिरस्कृत हुए धर्मद्रोही कुप्रचारकों के हृदय में ईर्ष्या की ज्वालाएँ भड़क उठीं। उन्होंने पंडितों को उकसाया। पंडितों ने पुरंदरदासजी के गीतों के संग्रह उठाकर फेंक दिये। समाज में हाहाकार मच गया। सज्जनों ने संगठित होकर षड्यंत्रकारियों को खूब लताड़ा और पुरंदरदासजी से अश्रुपूरित नेत्रों से प्रार्थना की कि 'कैसे भी करके आपके ग्रंथ समाज को वापस मिल जायें।' पुरंदरदासजी ने उनकी प्रार्थना स्वीकार की और वे ग्रंथ भक्तों को वापस मिले। लोगों ने पुरंदरदासजी के ग्रंथों की आदरपूर्वक पूजा की और अपना लिया। वे ही सद्ग्रंथ 'पुरंदरदासजी की उपनिषद्' के नाम से प्रसिद्ध हुए। ये महान लोकसंत अस्सी वर्ष की अवस्था में वि.सं. १५६२ में भगवद्धाम पधारे।

अब तो पुरंदरदासजी के भक्तिगीतों का प्रचार-प्रसार बहुत ही बढ़ गया है परंतु धनभागी तो वे हैं जिन्होंने इन संत की हयाती में ही इनका प्रत्यक्ष सत्संग-सान्निध्य लाभ लिया एवं इनके दैवी कार्य में लगके अपने जीवन को रसमय, आनंद-माधुर्यमय बनाया! ❐

फुटपाथी नहीं, वास्तविक शांति

(पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)

भगवान की भक्ति करनेवाला, भगवान में प्रीति रखनेवाला, गुरु की आज्ञा में चलनेवाला व्यक्ति सुखी रहता है, सुख-दुःख में समचित्त रहता है, शांत रहता है और भगवान को, गुरु को, गुरु के ज्ञान को न माननेवाला सदैव दुःखी रहता है, अशांत रहता है। **अशांतस्य कुतः सुखम् ?** अशांत को सुख कहाँ ?

लड़का कहना नहीं मानता, बेटी की मँगनी नहीं हो रही, नौकरी में तरक्की नहीं मिल रही, मकान की यह समस्या है, बरसात ऐसी है, खेत में ऐसा है- अशांत हो गये और यह सब अनुकूल हो गया तो हाश ! शांति। बस नहीं मिलती, अशांति हो गयी। बस आ गयी, हाश ! शांति। लेकिन शाम को फिर बस नहीं आयी तो शांति अशांति में बदल गयी। तो आधिदैविक, आधिभौतिक और आध्यात्मिक ये तीन शांतियाँ तो बेचारी आती-जाती रहती हैं। अगर आत्मानुभूति हो गयी तो परम शांति मिलेगी, फिर आने-जानेवाली फुटपाथी शांति-अशांति की कीमत ही नहीं रहेगी।

ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति।

'ज्ञान को प्राप्त होकर वह बिना विलम्ब के, तत्काल ही भगवत्प्राप्तिरूप परम शांति को प्राप्त हो जाता है।'

(भगवद्गीता : ४.३९)

शान्तिमाप्नोति नैष्ठिकीम्। (गीता : ५.१२)

भगवत्प्राप्तिरूप शांति मिल जाती है। कुछ मिले, कोई आये-जाय तब शांति... नहीं, अपने-आपमें तृप्त ! सुख के लिए किसी व्यक्ति, वस्तु, परिस्थिति की गुलामी न करनी पड़े ऐसी वास्तविक शांति, परम शांति की कुंजी मिल जाय तो दुःख मिट सकता है। सारे दुःख मिटानेवाली यह परम शांति चाहिए तो जिन्होंने परम शांति पायी है ऐसे ब्रह्मवेत्ता महापुरुषों की संगति में जाना चाहिए। उनकी करुणा-कृपा से हृदय की ज्योति जग जाती है और वास्तविक शांति मिल जाती है। जो लोग उनके सत्संग में जाते हैं, जिन पर उनकी निगाह पड़ती है, जिनको उनकी प्रसादी मिलती है वे लोग धन्य हैं ! ❐

अद्भुत मंत्र

(पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)

हाथी बाबा, हरि बाबा, उड़िया बाबा, आनंदमयी माँ - ये चार समकालीन संत वृन्दावन में रहते थे । हरि बाबा से पूछा गया : ''बाबा ! आप ऐसे महान संत कैसे बने ?''

हरि बाबा ने कहा : ''बचपन में जब हम खेल खेलते थे तो एक साधु भिक्षा लेकर आते और हमारे साथ खेल खेलते । एक दिन साधु भिक्षा लाये और उनके पीछे वह कुत्ता लगा जिसे वे रोज टुकड़ा दे देते थे । पर उस दिन टुकड़ा दिया नहीं और झोले को एक ओर टाँगकर हमारे साथ खेलने लगे किंतु कुत्ता झोले की ओर देखकर पूँछ हिलाये जा रहा था । तब बाबा ने कुत्ते से कहा : 'चला जा, आज मेरे को कम भिक्षा मिली है । तू अपनी भिक्षा माँग ले ।'

फिर भी कुत्ता खड़ा रहा । तब पुनः बाबा ने कहा : 'जा, यहाँ क्यों खड़ा है ? क्यों पूँछ हिला रहा है ?'

तीन-चार बार बाबा ने कुत्ते से कहा किंतु कुत्ता गया नहीं । तब बाबा आ गये अपने बाबापने में और बोले : 'जा, उलटे पैर लौट जा ।'

तब वह कुत्ता उलटे पैर लौटने लगा ! यह देखकर हम लोग दंग रह गये । हमने खेल बंद कर दिया और बाबा के पैर छुए । बाबा से पूछा : 'बाबा ! यह क्या, कुत्ता उलटे पैर जा रहा है ! आपके पास ऐसा कौन-सा मंत्र है कि वह ऐसे चल रहा है ?'

बोले : 'बेटे ! वह बड़ा सरल मंत्र है - **सब में एक - एक में सब** । तू उसमें टिक जा बस !'

तब से हम साधु बन गये ।''

उसमें टिककर संकल्प चलाये ।
मुर्दा भी जीवित हो जाये ॥

मैं कहता हूँ तुम्हारे आत्मदेव में इतनी शक्ति है, तुम्हारे चित्त में चैतन्य वपु का ऐसा सामर्थ्य है कि तुम चाहो तो भगवान को साकार रूप में प्रकट कर सकते हो, तुम चाहो तो भगवान को सखा बना सकते हो, तुम चाहो तो दुष्ट-से-दुष्ट व्यक्ति को सज्जन बना सकते हो, तुम चाहो तो देवताओं को प्रकट कर सकते हो। देवता अपने लोक में हों चाहे नहीं हों, तुम मनचाहा देवता पैदा कर सकते हो और मनचाहे देवता से मनचाहा वरदान ले सकते हो, ऐसी आपकी चेतना में ताकत है । अगर देवता कहीं है तो वह आ जायेगा, अगर नहीं है तो तुम्हारे आत्मदेव उस देवता को पैदा कर देंगे । उसीके द्वारा वरदान और काम करा देंगे । ऐसी तुममें शक्तियाँ छुपी हैं ।

सुन्या सखना कोई नहीं सबके भीतर लाल ।
मूरख ग्रंथि खोले नहीं कर्मी भयो कंगाल ॥

तो 'सब में एक - एक में सब' इसमें जो संत टिके होते हैं, वे तो ऐसी हस्ती होते हैं कि जहाँ आस्तिक भी झुक जाता है, नास्तिक भी झुक जाता है, कुत्ता तो क्या देवता भी जिनकी बात मानते हैं, दैत्य भी मानते हैं और देवताओं के देव भगवान भी जिनकी बात रखते हैं ।

ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ, देवी-देवता, यक्ष, गंधर्व, किन्नर आदि एवं भूत-प्रेत, आसुरी प्रकृतिवाले, तामसी प्रकृतिवाले, मोहिनी प्रकृतिवाले सब-के-सब लोग ऐसे ब्रह्मनिष्ठ सत्पुरुष को चाहते हैं एवं उनकी बात मानते हैं । ❑

'मैं क्या करूँ ?'

(पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)

कुछ लोग मेरे से पूछते हैं : 'मैं क्या करूँ ? मैं क्या करूँ ?' तो मुझे लगता है कि वे कितने भोले लोग हैं, अनजान हैं । जब दिन-रात स्पष्ट बोल रहा हूँ कि ऐसा चिंतन करो, ऐसा ध्यान करो फिर भी आकर पूछते हैं कि 'मैं क्या करूँ ? मैं क्या करूँ ?'

मैं बोलता हूँ : ''सुख-दुःख में सम रहो । जगत को सपना मानो, आत्मा को अपना मानो । प्रसन्न रहो । निष्काम भाव से सेवा करो । गहरा श्वास भरके फूँक मारकर छोड़ दो - ऐसे पाँच-सात बार करो । मूलबंध करो, उड्डियान बंध करो, जालंधर बंध करो और जीभ को तालू में लगाओ । दस प्राणायाम करो । ॐकार का गुंजन करो, दस-बीस मिनट भगवान या गुरु की तस्वीर की ओर एकटक देखो । श्वासोच्छ्वास की गिनती किया करो । 'ईश्वर की ओर, नारायण स्तुति, जीवन विकास, श्री योगवासिष्ठ महारामायण' आदि सद्ग्रंथ पढ़ा करो । कमरा बंद करके पाँच मिनट भगवान के लिए रोओ, नाचो, हँसो, गाओ । रुपया-पैसा है तो कमाई का २० प्रतिशत (पाँचवाँ हिस्सा), १० प्रतिशत (दसवाँ हिस्सा) दान-पुण्य करो । समय का दस प्रतिशत ध्यान-भजन, सेवा में लगाओ और अब 'मैं क्या करूँ' जो पूछता है उसको खोजकर मेरे पास ले आओ । अब 'क्या करूँ' वाले आयें तो इस सत्संग की 'मैं क्या करूँ' कैसेट दिखा दो बस ।''

बोले : ''बाबा ! यह सब तो बहुत अच्छा है लेकिन एक बात बताओ, मेरे लिए मैं क्या करूँ ?''

''तुम्हारे लिए तुम क्या करो... तो तुम क्या चाहते हो ?''

''बाबा ! मैं आपसे आपको ही चाहता हूँ ।''

''मुझसे मुझको ही चाहते हो तो भक्ति हो गयी पूरी !''

''बाबा ! आप तो मिलते ही नहीं हो, तो आपको पाने के लिए क्या करूँ ?''

''हम बिछुड़ते ही नहीं हैं लालू ! केवल यहीं नहीं हैं हम । जो दिख रहे हैं उतने ही हम नहीं हैं । अभी जो बताया न 'क्या करूँ' का उत्तर, उसमें से करोगे तो पता चलेगा । फिर स्वप्न में भी मुलाकात होगी । कभी जाग्रत में भी दर्शन-वर्शन होगा । कभी तुम्हारे मन में जो भी प्रश्न उठेगा, सत्संग में उसका उत्तर मिल जायेगा ।''

''बापूजी ! ऐसा करो कि मैं जब चाहूँ आपसे मिल सकूँ, बस इतना कर दो न !''

''ये छोटी-छोटी बातें क्यों करते हो ? तुम ऐसे मिलो कि बिछुड़ो ही नहीं ।''

''तो बाबा ! क्या करूँ ?''

''बस, क्या करूँ को ही छोड़ दो ।''

''फिर क्या करूँ ?''

''क्या करूँ कौन पूछ रहा है, उसको खोजो और सद्गुरु के चित्र को एकटक देखो । फिर चित्र से क्या प्रकट होता है, कैसा प्रकाश होता है, अंदर क्या अनुभूति होती है उसे देखते रहो ।''

''बापूजी ! यहाँ भी पहुँच गये, फिर क्या करूँ ?''

''फिर 'श्री योगवासिष्ठ' का 'वैराग्य प्रकरण' पढ़ो । कभी-कभी 'उत्पत्ति प्रकरण' पढ़ो, कभी 'स्थिति प्रकरण' पढ़ो और शांत होते जाओ ।''

बोले : ''यहाँ भी पहुँच गये, फिर क्या

करूँ ?''

''फिर मेरे ध्यान योग शिविर में कभी आया करो।''

''लेकिन बच्चे कहना नहीं मानते हैं, क्या करूँ ? पति कहना नहीं मानता है, क्या करूँ ? पत्नी कहना नहीं मानती है, क्या करूँ ? आदमी शराब पीता है, क्या करूँ ?''

''आदमी शराब पीता है तो उसके मस्तक के पीछे नजर डाल और 'शराब छोड़ दो, शराब छोड़ दो...' उसका नाम लेकर बोला कर तो वह शराब छोड़ देगा। बेटे कहना नहीं मानते हैं तो न मानें, तू चिंता छोड़ फिर अपने-आप मानेंगे। और मानें तो क्या, नहीं मानें तो क्या ! ज्ञान का आश्रय ले।''

''मेरी पड़ोसिन मेरे को देखकर जलती है तो क्या करूँ ? मेरी ननद, मेरे रिश्तेदार मेरे साथ ऐसा व्यवहार करते हैं, ऐसा जलते हैं तो मैं क्या करूँ ?''

''जो किसीको देखकर जलते हैं न, वे अपने लिए ही दुःख बनाते हैं। वे अपने लिए दुःख न बनायें इसलिए तुम उनसे प्रेमभरा व्यवहार करो।''

''मैं तो प्रेमभरा व्यवहार करती हूँ लेकिन वे हैं ही ऐसे।''

''वे हैं ऐसे लेकिन 'उनकी गहराई में बैठकर मेरा प्रभु देख रहा है कि मैं कितनी उदार हूँ' - ऐसा विचार करके अपनी उदारता को बरसाया कर।''

''लेकिन वे मुझे उल्लू बनाते हैं।''

''उल्लू बनाते हैं यह पता है न, तो बस उल्लू बनो मत और उनको उल्लू बनाओ मत।''

''तो मैं क्या करूँ ?''

''थोड़ा धैर्य रख, समय की धारा में सब ठीक हो जायेगा।''

''मेरे को देखके बहुत जलते हैं।''

''वे सदा रहनेवाले नहीं हैं, तेरे को पता नहीं है। वे कभी बीमार हो जायेंगे, कभी मन बदल जायेगा अभी तू चिंता काहे को करता है ! अभी तो कुछ नहीं कर रहे हैं ?''

''नहीं, अभी कुछ नहीं कर रहे हैं लेकिन कभी भी कुछ भी कर सकते हैं।''

''जब करेंगे तब देखा जायेगा। **'ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधि पुष्टिवर्धनं...'** मंत्र जपके निकला कर, तेरा कुछ नहीं बिगड़ेगा।''

''यह बात ठीक है लेकिन कभी एकाएक कोई मुसीबत आ जाय तो क्या करूँ ?''

''मुसीबत सहने की तैयारी रख और फिर भी कोई बड़ी मुसीबत है तो **'ॐ ह्रीं ॐ, ॐ ह्रीं ॐ, ॐ ह्रीं ॐ...'** का जप करके दे आहुतियाँ, तो मुसीबत को रोकनेवाला वातावरण पैदा हो जायेगा और वह विघ्न-बाधाओं को दूर कर देगा।''

''हाँ, यह बात ठीक है। अब बताओ, डॉक्टर ने बच्ची का, बच्चे का ऑपरेशन करवाने को बोला है, करूँ कि नहीं करूँ ?''

''मेरे वैद्य से सलाह ले ले। जितना हो सके बिना ऑपरेशन के ठीक हो जायें। वैद्य बोले कि कराओ तो ऑपरेशन करा ले।''

''लेकिन आँखों में ऐसा है... अभी क्या करूँ ?''

''आँखों में तकलीफ है तो हथेलियों को आपस में रगड़के बंद आँखों पर लगाया कर। नेत्रबिंदु डाल।''

''शरीर के किसी भी अंग में तकलीफ हो तो उस अंग पर यह हथेलियोंवाला प्रयोग करूँ क्या ?''

''हाँ।''

''देखो 'क्या करूँ, क्या करूँ' पूछनेवालों ने सबके लिए अच्छी नयी कैसेट बना दी।''

''हाँ, कैसेट तो अच्छी बनायी लेकिन मैं क्या करूँ ?''

''इसे घर के लिए और पड़ोस के लिए भी ले जा, काम में आयेगी।'' **(शेष पृष्ठ १७ पर)**

घर से जाओ खाके तो बाहर मिले पकाके

(पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)

अंतर्यामी ईश्वर की शरण लेने से मनुष्य का अवश्य कल्याण होता है । उसके सहारे सब कार्य करने से मानव कार्य के बोझ से मुक्त हो जाता है । क्रिया का भार अपने ऊपर लेने से अहंकार की उत्पत्ति होती है, काम बिगड़ जाते हैं । जो सबसे बड़ा सहारा और पालनहार है, उस चैतन्यस्वरूप परमात्मा की शरण में जाने से किसीका सहारा नहीं लेना पड़ता ।

हर व्यक्ति अपने से किसी-न-किसी ऊँचे की शरण जाता है । बेल (लता) भी वृक्ष की शरण जाती है, तब ऊपर उठती है । अनपढ़ पठित की शरण जाता है तो विद्वान बनता है । हारा हुआ व्यक्ति हिम्मतवाले की शरण जाता है तो जीतता है । सब किसी-न-किसीका सहारा लेते ही हैं । छोटा नेता बड़े नेता के आगे-पीछे घूमता है और बड़ा नेता भी किसी और बड़े नेता के आगे-पीछे घूमता है और वह बड़ा नेता संत या देवी-देवता की शरण लेता है, फिर चाहे किसी महापुरुष की कृपा की शरण ले या भगवान की कृपा की शरण ले । जब शरण लेनी ही है तो भाई ! आप सीधे परमात्मा की शरण दिलानेवाली भगवद्-साधना कर लो, ताकि इधर-उधर की शरण लेने की जरूरत न पड़े ।

कबीरा इह जग आयके बहुत से कीन्हे मीत ।
जिन दिल बाँधा एक से वे सोये निश्चिंत ॥

बहुतों की शरण ली, बहुतों से मित्रता की कि 'यह काम आयेगा, वह काम आयेगा, यह सेठ काम में आयेगा, यह नेता काम में आयेगा, यह फलाना भाई काम में आयेगा...' ठीक है लेकिन आपका आत्मचैतन्य होगा तभी तो आप चल-फिर सकोगे और दूसरों के काम में आओगे । जो सतत आपके काम आ रहा है, उसका पता सद्गुरु के सत्संग से पा लो, दीक्षा के द्वारा उससे नाता जोड़ लो तभी दूसरे कोई काम आयेंगे । अगर उस चैतन्यस्वरूप परमात्मा से संबंध नहीं तो दूसरे कब तक काम आयेंगे ?

घर से जाओ भूखे तो बाहर मिलें धक्के ।
घर से जाओ खाके तो बाहर मिले पकाके ॥

इसलिए रोज सुबह आप गुरुमंत्र जपते हुए सात्त्विक श्रद्धापूर्वक अपने हृदय को भगवद्रस से भरो, भगवद्ध्यान से भरो, सत्संग की कोई पुस्तक पढ़कर या तो कैसेट सुनकर सत्संग के पवित्र विचारों से भरो, परमेश्वरीय आनंद से भर दो ।

आप तृप्त होकर फिर व्यवहार करिये, भूखे पेट कब तक मजदूरी करेंगे ? इतना तो मजदूर भी जानता है कि भले गरीबी है, फिर भी काम पर जाना है तो कुछ टिक्कड़ (रोटी) खाकर जाऊँ । ऐसे ही आपको भी जब बाहर किसीसे मिलना है तो अंदर की एक-दो प्याली पीकर फिर जाइये । वह प्याली बोतल की नहीं; भगवद्ध्यान की, भगवद्-सत्संग की, भगवन्नाम-जप की, भगवद्-स्मृति की प्याली पीजिये ।

जाम पर जाम पीने से क्या फायदा ?
रात बीती सुबह को
अभागी अल्कोहल उतर जायेगी ।
तू हरिनाम की प्यालियाँ पिया कर,
तेरी सारी जिंदगी सुधर जायेगी, सुधर जायेगी ॥ ❒

भोगों में चार दोष

- पूज्य बापूजी

भोगों में चार दोष हैं । एक तो भोग सदा उपलब्ध नहीं रहते हैं । दूसरा उनको भोगने की रुचि भी सतत नहीं रहती है । तीसरा वे नष्ट हो जाते हैं और चौथा भोक्ता क्षीण होने लगता है । आदमी जितना अधिक भोग भोगेगा उतना बेचैन रहेगा, अशांत रहेगा, बिखरा हुआ रहेगा और उतना ही वह सहनशक्ति और सूझबूझ का धनी नहीं रहेगा तथा जितना कम भोग भोगेगा उतना वह शांत रहेगा, उतनी उसमें सहनशक्ति होगी ।

भोक्ता जितना ज्यादा भोगी होगा उतना वह बिखर जाता है, इसीलिए विलासी आदमी को, भोगी आदमी को, चंचल आदमी को जल्दी चिढ़ आती है । स्वभाव को हमेशा मधुर रखो एवं प्रसन्न रहो । चिढ़, शोक, चिंता को मत आने दो । जिंदगी के ६५ साल में से २८-३० साल गुजर गये, बाकी ३५-३७ साल भी गुजर जायेंगे, ऐसा सोचके निश्चिंत होओ । निश्चिंत रहने से सूझबूझ अच्छी रहती है । ज्यादा चिंता ठीक नहीं । क्या करना, क्या नहीं करना - इसका चिंतन करना चाहिए, लेकिन चिंतन करके फिर आप थोड़े चिंतन से फारिग (मुक्त) हो जायें । चिंतन चिंता न बन जाय- सावधानी रखें, नहीं तो उसमें आप खो जायेंगे । चिंतन में खो मत जायें, नहीं तो भोक्ता क्षीण हो जायेगा ।

भोग भोगने चाहिए, मना नहीं है । मजे से खाओ, खूब चबा-चबाकर खाओ, रस लेते हुए खाओ लेकिन इतना खाओ कि ठीक से पचे, शरीर भारी न लगे, एसिड़िटी (अम्लपित्त) न हो और आपको भविष्य में उससे रोग न हों । तो भोक्ता क्षीण न हो जाय - भोक्ता का स्वास्थ्य बना रहे, भोक्ता की अक्ल-सूझबूझ ठीक रहे ऐसा भोजन करो ।

देखो ऐसा, जिसे देखने से विकार उत्पन्न न हों, जिसे देखने से शक्तियाँ कम-से-कम क्षीण हों । आप जितना ज्यादा देखते हैं उतनी आँखों से आपकी रश्मियाँ क्षीण होती हैं । लोग फुटबाल मैच देखने जाते हैं, क्रिकेट मैच देखने जाते हैं... सच पूछो तो क्रिकेट खेलनेवाले जो खिलाड़ी हैं, वे दर्शक को सुख नहीं देते । स्वयं उन बेचारों के पास ही सुख नहीं है तो वे दर्शकों को सुख थोड़े ही देंगे ! खिलाड़ी खेलते हैं और आपके अंदर खेल की वासना छुपी है, मौका नहीं है खेलने का । आप सुबह मैच देखने आते हैं तब तरोताजा होते हैं और जब आप खेल देखने में तन्मय हो जाते हैं तब आपकी जो आभा, ऊर्जा या जीवनशक्ति की रश्मियाँ हैं वे नेत्रों से पसार होती हैं । जब नेत्रों से आपकी जीवनशक्ति की रश्मियाँ क्षीण होने लगती हैं तब आपको सुख मिलता है । आप अधिक समय देखोगे तो थक जाओगे, ऊब जाओगे और दूसरा दिन आप नींद के लिए अथवा आराम के लिए खर्च करोगे ।

तो भोगों में ये चार दोष रहते हैं -

(१) वे भोक्ता को क्षीण करते हैं ।

(२) सदा उपलब्ध नहीं रहते हैं ।

(३) मन की उनके प्रति रुचि सदा नहीं रहती ।

(४) वे नष्ट हो जाते हैं । ❑

गुरुतत्त्व

- ब्रह्मलीन स्वामी शिवानंदजी

जिस प्रकार पिता या पितामह की सेवा करने से पुत्र या पौत्र खुश होता है, इसी प्रकार गुरु की सेवा करने से मंत्र प्रसन्न होता है। गुरु, मंत्र एवं इष्टदेव में कोई भेद नहीं मानना। गुरु ही ईश्वर हैं। उनको केवल मानव ही नहीं मानना। जिस स्थान में गुरु निवास कर रहे हैं वह स्थान कैलास है। जिस घर में वे रहते हैं वह काशी या वाराणसी है। उनके पावन चरणों का पानी गंगाजी स्वयं हैं। उनके पावन मुख से उच्चारित मंत्र रक्षणकर्ता ब्रह्मा स्वयं ही हैं।

गुरु की मूर्ति ध्यान का मूल है। गुरु के चरणकमल पूजा का मूल हैं। गुरु का वचन मंत्र का मूल है और गुरु की कृपा मोक्ष का मूल है।

गुरु तीर्थस्थान हैं। गुरु अग्नि हैं। गुरु सूर्य हैं। गुरु समस्त जगत हैं। समस्त विश्व के तीर्थधाम गुरु के चरणकमलों में बस रहे हैं। ब्रह्मा, विष्णु, शिव, पार्वती, इन्द्र आदि सब देव और सब पवित्र नदियाँ शाश्वत काल से गुरु की देह में स्थित हैं। केवल शिव ही गुरु हैं।

गुरु और इष्टदेव में कोई भेद नहीं है। जो साधना एवं योग के विभिन्न प्रकार सिखाते हैं, वे शिक्षागुरु हैं। सबमें सर्वोच्च गुरु वे हैं जिनसे इष्टदेव का मंत्र श्रवण किया जाता है और उसका अर्थ एवं रहस्य समझा जाता है। उनके द्वारा ही सिद्धि प्राप्त की जा सकती है।

अगर गुरु प्रसन्न हों तो भगवान प्रसन्न होते हैं और गुरु नाराज हों तो भगवान नाराज होते हैं। गुरु इष्टदेवता के पितामह हैं।

जो मन, वचन, कर्म से पवित्र हैं, इन्द्रियों पर जिनका संयम है, जिनको शास्त्रों का ज्ञान है, जो सत्यव्रती एवं प्रशांत हैं, जिनको ईश्वर-साक्षात्कार हुआ है वे गुरु हैं।

बुरे चरित्रवाला व्यक्ति गुरु नहीं हो सकता। शक्तिशाली शिष्यों को कभी शक्तिशाली गुरुओं की कमी नहीं रहती। शिष्य को गुरु में जितनी श्रद्धा होती है उतने फल की उसे प्राप्ति होती है। किसी आदमी के पास अगर यूनिवर्सिटी की उपाधियाँ हों तो इससे वह गुरु की कसौटी करने की योग्यतावाला नहीं बन जाता। गुरु के आध्यात्मिक ज्ञान की कसौटी करना, यह किसी भी मनुष्य के लिए मूर्खता एवं उद्दण्डता की पराकाष्ठा है। ऐसा व्यक्ति दुनियावी ज्ञान के मिथ्या-अभिमान से अंध बना हुआ है।

आत्मानुभवी गुरुओं से लाभ लेना बुद्धिमानी है और उन पर दोषारोपण करना मति-गति की नीचता है।

न देवा दण्डमादाय रक्षन्ति पशुपालवत्।
यं तु रक्षितुमिच्छन्ति बुद्ध्या संविभजन्ति तम्॥

'देवता लोग चरवाहों की तरह डण्डा लेकर पहरा नहीं देते। वे जिसकी रक्षा करना चाहते हैं, उसे उत्तम बुद्धि से युक्त कर देते हैं।'

(विदुरनीति : ३.४०) ☐

(पृष्ठ १४ का शेष) अब 'क्या करूँ' वाले आयें तो यह 'मैं क्या करूँ' कैसेट दे दो बस।''

''बापूजी ! आप बहुत अच्छे लगते हो।''

''तो तेरा जी करता है कि तू पकड़कर घर में ले जायेगा ?''

बोले : ''बापूजी ! मैं क्या करूँ, आप आनेवाले नहीं हैं न !''

''अरे ! हम जानेवाले भी तो नहीं हैं। यह 'मैं क्या करूँ' सी.डी. देखा-सुना कर और सद्गुरु की तस्वीर को एकटक देखा कर, फिर देख मैं मिलता भी नहीं, बिछुड़ता भी नहीं।'' ☐

दैवी सम्पदा विकसित करो

- पूज्य बापूजी

तुम अपने जीवन में आत्मतेज को जगाओ। जब तक तुमने आत्मतेज नहीं जगाया, तब तक भगवान में दृढ़ प्रीति नहीं होगी, तब तक मन का धोखा दूर नहीं होगा और चाहे कितना भी कुछ तुमने पाया लेकिन असली खजाना दबा-सा रह जायेगा इसलिए अपने जीवन में तेज लाओ।

'भगवद्गीता' के १६वें अध्याय के तीसरे श्लोक में भगवान कहते हैं :

तेजः क्षमा धृतिः शौचमद्रोहो नातिमानिता।
भवन्ति सम्पदं दैवीमभिजातस्य भारत ॥

'तेज, क्षमा, धैर्य, बाहर की (शरीर की) शुद्धि तथा किसीमें भी शत्रुभाव का न होना और अपने में पूज्यता के अभिमान का अभाव - ये सब तो हे अर्जुन ! दैवी सम्पदा को लेकर उत्पन्न हुए पुरुष के लक्षण हैं।'

'दैवी सम्पदा' माना उस देव की सम्पदा, उस आत्मदेव की सम्पदा को अपने हृदय में जगाओ। ज्यों-ज्यों तुम्हारे हृदय में आत्मदेव की सम्पदा जगेगी, त्यों-त्यों उस देव में तुम्हारी प्रतिष्ठा होने लगेगी, स्थिति होने लगेगी। जैसे अभी हाड़-मांस के शरीर में स्थिति है, राग-द्वेष में स्थिति है, चिंता, शोक, भय, क्रोध में स्थिति है ऐसे ही भगवत्तत्त्व में स्थिति हो जायेगी तो मुक्ति का अनुभव यहीं हो जायेगा।

तेजः क्षमा... खाने-पीने और ठंडे प्रदेश में रहने से चेहरे पर चमक तो आती है लेकिन उसे 'शास्त्रीय तेज' नहीं कहा जाता है। तेज आता है सदाचार से, संयम से, सत्कर्म करने से और तेजोमय आत्मस्वरूप का धारणा-ध्यान आदि करने से। तुम्हारी बुद्धि में आध्यात्मिक तेज आयेगा तो विकारों का प्रभाव क्षीण होता जायेगा। जितना आदमी निस्तेज होगा उतना उस पर बाह्य प्रभाव ज्यादा पड़ेगा और जितना आदमी आध्यात्मिक तेज से तेजस्वी होगा उतना वह बाह्य प्रभाव से अपने को निर्मुक्त कर सकेगा।

तो भगवान कहते हैं अपना कल्याण करने के लिए अपने जीवन में तेज लाना चाहिए। भगवान में दृढ़ भक्ति का एक यह उपाय है कि जीवन में तेज और क्षमा का गुण हो। क्षमा का गुण अगर गृहस्थ-जीवन में नहीं है तो गृहस्थ की गाड़ी चलनी भी मुश्किल है। कभी बेटी गलती करेगी तो कभी बेटा गलती करेगा, कभी पति गलती करेगा तो कभी पत्नी गलती करेगी, कभी देवरानी की गलती होगी तो कभी जेठानी की होगी। अगर किसी बात को पकड़कर झुलसते रहे तो उसने तो गलती बाहर की लेकिन तुम उस बात को पकड़कर अपना हृदय अंदर खराब करते रहोगे।

तो भगवान कहते हैं : तुम्हारे जीवन में तेज, क्षमा, धैर्य होना चाहिए। धृति अर्थात् धैर्य। किसी वस्तु को देखकर मन लपक पड़े और बुद्धि निर्णय दे दे कि 'यह भोगें, यह खायें...' अथवा किसीका मकान देखा, किसीका कुछ देखा, किसीकी गाड़ी देखी और मन सोचे, 'यह मेरे को कब मिलेगी ?' तो यह ठीक नहीं है। जिनको मिली है उनके पास देखो, कब तक रहेगी और मिली तो वे पूर्ण सुखी हो गये क्या ?

बहुत पसारा मत करो कर थोड़े की आस।
बहुत पसारा जिन किया वे भी गये निराश ॥

बाह्य वस्तुओं में, बाह्य परिस्थितियों में और

बाहर के दुःख-सुख में मन बार-बार लपक जाय तो धैर्य के गुण को विकसित करने की आवश्यकता है। जिस किसी परिस्थिति से प्रभावित, आकर्षित न हों। 'यह चाहिए, वह चाहिए...'- चैनलों के द्वारा विज्ञापन देखकर अथवा मॉलों की चीजें देखके आकर्षित न हों। स्टॉलों-मॉलों से बिनजरूरी चीजें भी खरीद लेते हैं - ऐसे अधिक खर्च से या कर्ज के अधिक बोझ से दब जायेंगे, सहज जीवन से दूर होना पड़ेगा। अतः ऐसे आकर्षित न होकर कर्ज लेके यह खरीदो, वह खरीदो... इस चक्कर में नहीं पड़ना चाहिए। यह खरीदो, यह बढ़ाओ... ऐसे लोग कर्ज और ब्याज के बोझ से दबते जाते हैं, उसीमें खप जाते हैं। भगवान कहते हैं : **तेजः क्षमा धृतिः शौचं...**

शौचं... शौच का अर्थ है शुद्धि। शुद्धि दो प्रकार की होती है : आंतर शुद्धि और बाह्य शुद्धि। बाह्य शुद्धि तो साबुन, मिट्टी, पानी से होती है और आंतर शुद्धि होती है राग, द्वेष, वासना आदि के अभाव से। जिनकी आंतर शुद्धि हो जाती है उनको बाह्य शुद्धि की परवाह नहीं रहती। जिनकी बाह्य शुद्धि होती है उनको आंतर शुद्धि करने में सहाय मिलती है।

पतंजलि महाराज कहते हैं कि शरीर को शुद्ध रखने से वैराग्य का जन्म होता है। शरीर को शुद्ध रखने से वैराग्य का जन्म कैसे ? जिसमें शारीरिक शुद्धि होती है उसको अपने शरीर की गंदगी का ज्ञान हो जाता है। जैसी गंदगी अपने शरीर में भरी है ऐसी ही गंदगी दूसरों के शरीर में भी भरी है। अतः अपने शरीर में अहंता और दूसरों के शरीर के साथ विकार भोगने की वासना शिथिल हो जाती है। हृदय में छुपा हुआ आनंदस्वरूप चैतन्य, ईश्वर, परमात्मा हमारा लक्ष्य है, इस ज्ञान में वे लग जाते हैं।

भगवान बोलते हैं :

तेजः क्षमा धृतिः शौचं अद्रोहः...

किसीके लिए हृदय में द्रोह (शत्रुभाव) नहीं हो। यह जिसके प्रति होता है उसका तो घाटा हो या फायदा हो लेकिन जिसके हृदय में होता है उसको खराब कर देता है, इसलिए अपने हृदय में द्रोह को स्थान नहीं देना चाहिए।

तेजः क्षमा धृतिः शौचमद्रोहो नातिमानिता।

अति मान की इच्छा नहीं रखो। मान ऐसी चीज है कि जितना मिलता है उतना कम पड़ता है। मान योग्य कर्म तो करो लेकिन मान की वासना को भीतर पनपने मत दो, नहीं तो बड़ी गड़बड़ करायेगी। कोई ऐसी जगह भी रखो जहाँ वाहवाही करनेवाले लोग न हों अथवा उनका प्रभाव न हो। ऐसी जगह पर जाओ जहाँ तुम्हारा अहंकार कम करने का तुम्हें अवसर मिले, जहाँ तुम्हारा चित्त निर्भार हो जाय। जो आदमी वाहवाही से सुख ढूँढ़ता है, वह बेचारा गरीब है और उसे थोड़ी-सी वाहवाही कम मिली तो बड़ा दुःख होगा।

मान पुड़ी है जहर की, खाये सो मर जाय।
चाह उसीकी राखता, वो भी अति दुःख पाय॥

वाहवाही की इच्छा मत करो, फिर वाहवाही मिलती है तो कोई परवाह नहीं। निंदनीय काम मत करो, फिर भी निंदा होती है तो तुम्हारा हृदय बिगड़ेगा नहीं।

रक्षतां रक्षतां कोषानामपि हृदयकोषम्।

कोषों का कोष जो हृदयकोष है, उसकी तुम रक्षा करो। उसकी रक्षा की तो सबकी रक्षा की और उसकी रक्षा नहीं की तो सब कुछ सुरक्षित करते हुए भी आदमी बेचारा भीतर से कंगाल हो जाता है।

तो भगवान बोलते हैं कि जीवन में तेज, क्षमा आदि दैवी सम्पदा को लाओ। तेजस्वी जीवन बिताने की कुंजियाँ सीख लो। कुछ ऐसे प्रयोग हैं जिन्हें तुम रोज पंद्रह-बीस मिनट करो तो थोड़े ही दिनों में तुम्हारा चित्त तेज से भर जायेगा। सूरज का तेज नहीं, ट्यूबलाइट का तेज नहीं तुम्हारे हृदय में विवेक का तेज (शेष पृष्ठ २२ पर)

ऐसी वाणी बोलिये...

एक राजकुमार था। वह बड़ा ही घमंडी और उद्दण्ड था। उसके मुँह से जब देखो तब कठोर वचन ही निकलते थे। लोग उसके दुर्व्यवहार से बहुत परेशान थे। राजा उसे बहुत समझाता लेकिन उस पर कुछ असर ही नहीं होता था। विवश होकर राजा एक दिन एक संत के पास गया और उनके चरणों में प्रणाम कर अपनी परेशानी बतायी। संतश्री ने उसे सांत्वना देकर कहा : ''घबराओ नहीं, सब ठीक हो जायेगा।''

कुछ दिन बाद राजकुमार उन्हीं संत के दर्शन करने गया। संतश्री ने कहा : ''राजकुमार ! सामने जो पौधा है, उसकी कुछ पत्तियाँ तोड़कर लाओ।''

राजकुमार पत्तियाँ तोड़ लाया।

संत बोले : ''इन्हें खा लो।''

राजकुमार ने ज्यों ही पत्तियाँ मुँह में डालीं कि कड़वाहट के कारण तुरंत थूक दिया और जाकर उस पौधे को उखाड़के फेंक दिया।

संत ने पूछा : ''क्यों, क्या हुआ ?''

राजकुमार ने कहा : ''उस पौधे की पत्तियाँ बहुत कड़वी हैं। वह किसी काम का नहीं है इसीलिए मैंने उसे उखाड़ दिया।''

संत मुस्कराये और बोले : ''राजकुमार ! तुम भी तो लोगों को कड़वे वचन बोलते हो। अगर वे भी तुम्हारे दुर्व्यवहार से क्षुब्ध होकर वही करें, जो तुमने इस पौधे के साथ किया तो क्या परिणाम होगा ? देखो बेटा ! मीठी और हितभरी वाणी दूसरों को आनंद, शांति और प्रेम का दान करती है और स्वयं आनंद, शांति और प्रेम को खींचकर लाती है। मुख से ऐसा शब्द कभी मत निकालो जो किसीका दिल दुखाये और अहित करे।

हर व्यक्ति को स्नेह, प्रेम, सहानुभूति और आदर की आवश्यकता है। अतः किसीके भी साथ अनादर और द्वेषभरा व्यवहार न करके सबके साथ सहानुभूति और नम्रतायुक्त प्रेमभरा व्यवहार करो।''

राजकुमार को अपनी भूल का एहसास हुआ। संत की सीख मानकर उस दिन से उसने अपना व्यवहार बदल दिया। संत के उपदेश को आचरण में लाकर वह समस्त प्रजाजनों का प्रिय बनकर यश का भागी हुआ।

ऐसी वाणी बोलिये, मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करे, आपहुँ शीतल होय॥
कागा काको धन हरै, कोयल काको देत।
मीठा शब्द सुनाय के, जग अपनो करि लेत॥ ❑

✻ कुटुम्ब-परिवार में भी वाणी का प्रयोग करते समय यह अवश्य ख्याल में रखा जाय कि मैं जिससे बात करता हूँ वह कोई मशीन नहीं है, रोबोट नहीं है, लोहे का पुतला नहीं है मनुष्य है। उसके पास दिल है। हर दिल को स्नेह, सहानुभूति, प्रेम और आदर की आवश्यकता होती है। अतः अपने से बड़ों के साथ विनययुक्त व्यवहार, बराबरीवालों से प्रेम और छोटों के प्रति दया तथा सहानुभूति-सम्पन्न तुम्हारा व्यवहार जादुई असर करता है।

✻ जैसे जहाज समुद्र को पार करने के लिए साधन है, वैसे ही सत्य ऊर्ध्वलोक में जाने के लिए सीढ़ी है। व्यर्थ बोलने की अपेक्षा मौन रहना बेहतर है। वाणी की यह प्रथम विशेषता है। सत्य बोलना दूसरी विशेषता है। प्रिय बोलना तीसरी विशेषता है। धर्मसम्मत बोलना यह चौथी विशेषता है।

वहम का भूत

(पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)

आपके चेतन में, आपकी कल्पनाओं में बड़ी अद्‌भुत शक्ति है । आप जैसी कल्पना करते हैं ऐसा प्रतीत होता है, जैसा आप सोचते हैं वैसा दिखने लगता है । शरीर अनित्य है, मन परिवर्तनशील है और आप नित्य हैं लेकिन जब आप शरीर की उपाधि अपने में आरोपित कर देते हैं और 'मैं बीमार हूँ, मैं कमजोर हूँ, मैं दुःखी हूँ, मैं फलाना हूँ, मैं फलानी हूँ... मुझे किसीने कुछ कर दिया है, मेरे विरोधियों ने मेरे ऊपर यह कर दिया है...' यह स्वीकार कर लेते हैं, तो किसीने कुछ किया हो या न किया हो लेकिन आपने मान लिया तो फिर कोई कितना समझाये लेकिन आपकी मान्यता के कारण नब्बे प्रतिशत वही भास होगा जो आपने मान लिया है । 'मेरे को दुश्मन ने कुछ कर दिया है', ऐसा सोचते हैं तो मन उसी प्रकार का दुःख बना लेता है । यह वहम की जो मुसीबत है न, वह किसी वैद्य से, किसी डॉक्टर से तो क्या, किसी गुरु से भी नहीं निकलती !

अपना वास्तविक 'मैं' नित्य है, विकार अनित्य हैं लेकिन मन में यह घुस गया कि 'मैं विकारी हूँ' तो अनित्य विकार भी नित्य जैसे लगते हैं । गहराई में अगर कोई वहम घुस जाता है तो उसको निकालना बड़ा कठिन हो जाता है । बीमारी तो निकाल सकते हैं क्योंकि बीमारी शरीर में है लेकिन वहम मन में होता है । जब तक मन का वहम स्वयं नहीं निकालते तब तक हकीम, डॉक्टर, गुरु मिलकर भी हमारा वहम नहीं निकाल सकते, हमें ठीक नहीं कर सकते । अपनी मान्यता आप नहीं छोड़ेंगे तब तक कोई नहीं छुड़ा सकता । जब तक आप नहीं सोचते हैं कि यह तो 'भाई ! शरीर का है... मन का है... चलता है', तब तक आपका वहम कोई नहीं निकाल सकता है । आपने वहम छोड़ दिया तो बस दूर हो गया !

ऐसे ही दोष तो निर्जीव हैं लेकिन 'मेरे में दोष हैं' ऐसा मान लिया तो उनको बल दे दिया, फिर दोष मिटाने लगेंगे तो और मजबूत होंगे, दोष के अनुसार करेंगे तो भी आप दोषी हो जायेंगे; जब उनकी उपेक्षा करेंगे तो दोष हैं ही नहीं !

जैसे कुशवारी आप जाला बनाके उसीमें फँस मरती है, ऐसे ही कभी-कभी भोले आदमी अपनी ही कल्पनाओं के जाल में बुरी तरह फँस जाते हैं । जब तक अपनी कल्पना से आप कल्पना नहीं काटते, तब तक दूसरा कोई काट भी नहीं सकता; आपने अपने-आपमें जो विचार भर दिया है, वह आप नहीं छोड़ेंगे तो दूसरा कोई भी छुड़ा नहीं सकता । जैसे कन्या ने मान लिया कि 'मैंने फेरे फिर लिये, मैं फलाने की पत्नी हूँ ।' अब लाख उपाय करो उसे समझाने के कि तू फलाने की पत्नी नहीं है, तो भी बोलेगी : 'क्या बोलते हो !' मन में घुस गया कि 'मैं फलाने की पत्नी हूँ, मैं फलाने का पति हूँ, मैं फलानी जाति का हूँ...' मन में घुसेड़ दिया न ! वास्तव में देखो तो जात-पात कहाँ है ? कल्पना ही तो है ! तो हमने अपने में जो भर दिया, वह हम नहीं हटाते तब तक हटता नहीं ।

जैसे आसुमल, भूरो, भगवानजी, भगवान, प्रभुजी, आसाराम, बापूजी... जैसा-जैसा लोगों ने बोला, हम भी बोले : ठीक है । तो कोई इस नाम के लिए निंदो, चाहे वंदो... कुछ भी नहीं, सब काल्पनिक है, तो हमें तो मौज है लेकिन मैं मान लूँ कि 'मेरा नाम ही आसाराम है, मैं ही आसाराम हूँ, मैं ही बापूजी हूँ...' फिर उसकी वाहवाही में तो फूलूँ और निंदा में सिकुड़के दुःखी होऊँ । नहीं-नहीं, गुरुजी ने मुझे इस वहम से पार कर दिया । मुझे पता है कि यह तो रखा हुआ नाम है, थोपा हुआ है । ऐसे ज्ञान से ही कल्पनाएँ कटती हैं ।

दुःख की, सुख की कल्पनाएँ हो-होके बदल जाती हैं, हम नित्य हैं । नित्य को अनित्य क्या करेगा ? अमर को मरनेवाला क्या करेगा ? फिर भी डर-डरके परेशान हो रहे हैं : 'मेरे से यह गलती हो गयी, मेरे से यह हो गया, मेरे से वह हो गया, मेरे को नींद नहीं आती...' नहीं आये तो नहीं आये । 'नींद नहीं आती, नहीं आती...' थोड़ी नींद कम आयी तो उतनी देर भगवान का नाम ले । कल्पनाओं का जाल बुनकर अपने को फँसाओ मत, सताओ मत, नींद आने का मंत्र जान लो बस ! और लोगों की कल्पनाएँ - लोग यह कहेंगे, वह कहेंगे... उनकी कल्पनाओं में भी उलझो मत । सब बीत रहा है, बीतता जायेगा । संसार-स्वप्न को बीतने दो, अपने को ज्ञानस्वभाव में, प्रभुप्रेम स्वभाव में जगाओ । क्यों, जगाओगे न ! शाबाश वीर, शाबाश ! हिम्मत करो । संसार में पच मरने के लिए तुम्हारा जन्म नहीं हुआ, संसार के पिट्ठू बनने तुम नहीं आये हो । शरीर की मौत के बाद भी जिसका बाल बाँका नहीं होता, तुम वह ज्ञानस्वरूप, चैतन्यस्वरूप अमर आत्मा हो । अपने अमर स्वभाव को जानो ।

यह शरीर है; कभी कमजोरी, कभी गर्मी, कभी कुछ, कभी कुछ... - यह सब तो होता रहता है, दिन भर उसीका चिंतन कर-करके मारे जा रहे हैं । जो बीमारी का चिंतन करता है, दुःख का चिंतन करता है, शत्रु का चिंतन करता है... वह उसको बल देता है । आप तो निश्चिंत नारायण में मस्त रहो ।

चिंता से चतुराई घटे, घटे रूप और ज्ञान ।
चिंता बड़ी अभागिनी, चिंता चिता समान ॥
तुलसी भरोसे राम के, निश्चिंत होई सोय ।
अनहोनी होनी नहीं, होनी होय सो होय ॥

इस समझ को पक्का कर लो । जो होनी हो सो हो । फिकर फेंक कुएँ में, जो होगा देखा जायेगा । ❑

(पृष्ठ १९ का शेष) आ जायेगा, निर्भीकता आयेगी, अंतःकरण में शौर्य आयेगा । तुम्हारे अंतःकरण में आज तक जो छोटी-छोटी बातों के धक्के-मुक्के लग रहे थे, असर कर रहे थे वे नहीं करेंगे । जीवन जीने की कला सिखाती है गीता और वह भी युद्ध के मैदान में ! ऐसा नहीं कि अर्जुन ही युद्ध के मैदान में था, आप भी तो युद्ध के मैदान में हो ! क्रोध, लोभ, मोह, मात्सर्य आदि का तो युद्ध है लेकिन महँगाई और शोषण के युद्ध ने तो सभीको लपेट में ले रखा है और मृत्यु सामने खड़ी है, कब झपेट ले कोई पता नहीं । जीवन में ठाठ-बाट से जीना यह कोई महत्त्वपूर्ण नहीं है । मरने के बाद क्या गति होगी, उस पर ध्यान डालना महत्त्वपूर्ण है । बिल्ली जब आती है न, तो कबूतर आँख बंद कर लेता है । जब मौत की बात आती है न, तो आदमी कहता है : 'छोड़ो ! खाओ, पियो, मजा करो ।' लेकिन इससे काम नहीं चलेगा, हम लोगों को सावधान होकर भगवान द्वारा बतायी गयी दैवी सम्पदा का अर्जन करना चाहिए । दैवी सम्पदावाला पुरुष अपने परमात्मस्वभाव में जग जाता है । ❑

गौ-रस : महत्ता एवं लाभ

आयुर्वेद के अनुसार गाय से प्राप्त सभी वस्तुएँ मनुष्य का कल्याण करनेवाली हैं। गाय के गोबर में लक्ष्मी का वास बताया गया है तथा गोमूत्र गंगाजल के समान पवित्र माना गया है। गाय मानव-जाति के लिए प्रकृति का अनुपम वरदान है। गाय का दूध, दही, घी, मक्खन व छाछ अमृत का भण्डार है। इसी कारण कृतज्ञतावश भारतवर्ष में गौमाता की घर-घर पूजा होती रही है। गाय अपने गोबर और मूत्र से धरती को उपजाऊ बनाती है, जल और वायु का शोधन करती है। गाय ही एकमात्र ऐसा दिव्य प्राणी है जिसकी रीढ़ की हड्डी में 'सूर्यकेतु' नाड़ी है। अन्य प्राणी व मनुष्य जिनको नहीं ग्रहण कर सकते उन सूर्य की गौकिरणों को सूर्यकेतु नाड़ी ग्रहण करती है। इसलिए गाय सूर्य के प्रकाश में रहना पसंद करती है। इस नाड़ी के क्रियाशील होने पर वह पीले रंग का एक पदार्थ छोड़ती है, जिसे 'स्वर्णक्षार' कहते हैं। इसीके कारण देशी गाय का दूध, मक्खन व घी स्वर्ण-कांतियुक्त होता है।

दूध : गाय का दूध तो धरती का अमृत है। प्राकृतिक चिकित्सा में गाय के ताजे दूध की बहुत प्रशंसा की गयी है तथा इसे सम्पूर्ण आहार कहा गया है। आचार्य सुश्रुत ने गौदुग्ध को जीवनोपयोगी तथा आचार्य चरक ने इसे सर्वश्रेष्ठ रसायन कहा है क्योंकि गौदुग्ध ही एक ऐसा भोजन है, जिसमें प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, दुग्धशर्करा, खनिज लवण, वसा आदि मनुष्य-शरीर के सभी पोषक तत्त्व भरपूर पाये जाते हैं। गाय का दूध रसायन का कार्य करता है। यह अन्य प्राणियों के दूध की अपेक्षा हलका और तुरंत शक्तिवर्धक है। यह शरीर की गर्मी का नियंत्रक, रसों का आश्रय, पाचनाग्निवर्धक, श्रम को हरनेवाला, क्षय एवं कैन्सर के विषाणुओं का नाशक तथा शरीर में उत्पन्न विष का शामक है। प्रातः गाय का धारोष्ण दूध पीना बहुत ही शक्तिवर्धक होता है। इसमें घी मिलाकर पीने से मेधाशक्ति बढ़ती है। गाय के दूध और घी से कोलेस्ट्रॉल नहीं बढ़ता बल्कि रक्त की धमनियों में उत्पन्न अवरोध का निवारण होता है। देशी गायों का दूध ही हितकर है, जर्सी, होल्सटीन या उनकी संकर प्रजातियों का नहीं। डेयरी की प्रक्रिया से भी दूध का सात्त्विक प्रभाव नष्ट होता है।

यदि आप चाहते हैं कि आपके बच्चों का शरीर सुंदर एवं सुगठित हो, उनके वजन एवं कद में खूब वृद्धि हो, वे मेधावी और प्रचंड बुद्धि-शक्तिवाले व विद्वान बनें तो उन्हें नियमितरूप से देशी गाय का दूध व मक्खन खिलायें-पिलायें। सभीको कम-से-कम २७५ ग्राम दूध प्रतिदिन पीना चाहिए। गौदुग्ध में एक चम्मच गाय का घी मिलाकर पीने से शरीर पुष्ट होता है। गर्म दूध पीने से कफ का नाश तथा ठंडा करके पीने से पित्त का नाश होता है। दूध शरीर की जलन को समाप्त करके अन्न-पाचन में सहायता करता है। फलों के साथ दूध नहीं लेना चाहिए। शिशु से वृद्ध तक सभी उम्र के लोगों के लिए गौदुग्ध का सेवन हितकर है।

काली गाय का दूध त्रिदोषनाशक तथा सर्वोत्तम है । रूसी वैज्ञानिक शिरोविच ने कहा है : 'गाय के दूध में रेडियो विकिरण (एटॉमिक रेडिएशन) से रक्षा करने की सर्वाधिक शक्ति होती है ।'

शरीर को स्वस्थ बनाकर नवजीवन प्रदान करने के लिए 'दुग्धकल्प' किया जाता है । इसमें केवल दूध पर रहा जाता है । इससे जिगर, तिल्ली, गुर्दे आदि सही काम करने लगते हैं । **विदेशों में गौदुग्ध की डेयरी का विकास हुआ है परंतु हमारे यहाँ गायें बेचकर भैंसें खरीदी जा रही हैं, जिनका दूध पीकर नयी पीढ़ी आलसी और मंद बुद्धिवाली होती जा रही है ।**

रामसुखदासजी महाराज ने कहा था : 'गाय को इंजेक्शन लगाकर दूध निकालना उसकी हत्या के समान है एवं वह दूध खून के समान होता है, जिसे पीने से मनुष्य की बुद्धि खराब हो जाती है ।' और आज हमारे देश में वही किया जा रहा है । सरकार को ऐसे इंजेक्शन पर पाबंदी लगानी चाहिए । (क्रमशः) □

विशेष सूचना

सूचित किया जाता है कि 'ऋषि प्रसाद' पत्रिका की सदस्यता के नवीनीकरण के समय पुराना सदस्यता क्रमांक/रसीद क्रमांक एवं सदस्यता 'पुरानी' है - ऐसा लिखना अनिवार्य है। सदस्यता की शुरुआत किस माह से करनी है यह भी अवश्य लिखें । जिसकी रसीद में ये नहीं लिखे होंगे, उस सदस्य को नया सदस्य माना जायेगा । आजीवन सदस्यों के अलावा नये सदस्यों की सदस्यता एक माह पूर्व से शुरू की जायेगी तथा सदस्यता के अंतर्गत उन्हें एक पूर्व-प्रकाशित अंक भेजा जायेगा ।

अनर्थों का मूल : आलस्य

आलस्य मानव की उन्नति में रिपु (शत्रु) है । भले कामों में अथवा कर्तव्य-कर्मों में जी चुराने का नाम आलस्य है । आलस्य ऐसा भारी दोष है कि इससे मनुष्य अपना वर्तमान और भविष्य घोर दुःखान्धकार से ही भरा हुआ पाता है । आलस्य के कारण ही मनुष्य बड़े-बड़े लाभ के अवसरों को, अच्छे-अच्छे उन्नति के साधनों को व्यर्थ में ही खो देता है और फिर अपने भाग्य को कोसते हुए मरता है । कर्तव्य से जी चुराना ही आलस्य है ।

शारीरिक स्वस्थता, मानसिक शक्ति, बौद्धिक विकास और ज्ञान-प्रकाश प्राप्त करने का साधन प्रत्येक मनुष्य को सुलभ है, किंतु जो आलसी है वह दुर्भाग्यवश उन महान लाभों से वंचित रहते हुए पशुवत् जीवन काटता रहता है ।

आलस्य के कारण ही मनुष्य अभी का कार्य आगे कर लेने के लिए टालता रहता है । प्रातःकाल का काम दिन चढ़ने पर करता है, मध्याह्न का कार्य दिन ढलने पर आरम्भ करता है ।

इस प्रकार दिन का कार्य पूरा न होकर रात्रि में बोझ की तरह भार बनकर मन के ऊपर लदा रहता है । पूर्ण विश्राम की नींद भी सपनों की भरमार से नहीं आ पाती । आलस्यवश ही आज का काम कल के लिए, इस महीने का काम दूसरे

महीने के लिए, इस वर्ष का काम दूसरे वर्ष के लिए टलते-टलते जीवन का कार्य इस जीवन में पूरा नहीं होता । इसके परिणामस्वरूप मनुष्य शांतिपूर्वक मर भी नहीं पाता ।

प्रायः मनुष्य आलस्य को विश्राम समझने की भूल किया करता है। कभी वह छोटे या बड़े काम समय और शक्ति के रहते हुए भी आगे के लिए टालता है। यह आलस्य का ही भुलावा है।

जो लोग अधिक देर तक सोने के अभ्यासी हो गये हैं उनका चित्त कर्तव्य-कर्मों में सावधान नहीं रहता, उनमें दक्षता नहीं पायी जाती । मनोयोग की कमी और विस्मृति दोष अधिक रहता है। अधिक नींद से आलसी प्रकृति में अधिकाधिक निद्रा का प्रभाव दृढ़ रहता है, ऐसी नींद विश्रामदायी न होकर दुःस्वप्नों से थकानेवाली होती है। जो लोग जागने के समय सोते हैं वे ही सोने के समय जागकर अस्वस्थ होते हैं । जो लोग परिश्रमी नहीं हैं, जो दिन में अपने शरीर और बुद्धि का कार्य-संलग्नता में उपयोग नहीं करते, वे भी एक तरह से निद्रित अवस्था में समय खोनेवाले जीव हैं।

आलस्य तमाम अभावों और कष्टों का मूल है । कुछ विद्यार्थी प्रातःकाल उठने में आलस्य करने के कारण ही विद्योपार्जन में निर्बल रहते हैं, साथ ही प्रातःकालीन स्वस्थ, शक्तिप्रद वायु तथा सूर्योदय की तमाम प्राणतत्त्व-प्रदायिनी किरणों के अनुपम लाभ से भी वंचित रहते हैं । जिस ऊषाकाल में अचेतन प्रकृति भी जागती जैसी दिखती है, उस समय सचेतन मानव सोता रहे तो यह उसकी मूर्खता है।

संसार के बड़े-बड़े वैज्ञानिकों, यथार्थदर्शी बुद्धिमान एवं ज्ञानियों तथा बड़े-बड़े कर्मयोगियों से कोई भी पूछकर जान सकता है कि वे आलस्य का त्याग प्रातःकाल से ही आरम्भ कर रात्रि के सोने के समय तक किस प्रकार करते हुए अपने-अपने लक्ष्य-पथ में अग्रसर हुए । एक व्यापारी कभी-कभी आलस्य के कारण ही बड़े-बड़े लाभ के सौदे को हाथ से निकल जाते देखता है और फिर भाग्य को कोसता है। एक सेवक या सिपाही आलस्य के कारण ही उन्नति के अवसरों को खो देता है और सदा के लिए स्वामी की निगाहों में गिर जाता है। आलस्य के का .ण ही एक व्यक्ति बहुत आवश्यक कार्यस्थल पर पहुँचने के लिए ज्यों ही स्टेशन पर कुछ मिनट देर से पहुँचता है कि गाड़ी छूटती हुई दिखती है, फिर पश्चात्ताप की वेदना से दुःखी होता है।

जिस प्रकार लोहे को उसका जंग खा जाता है उसी प्रकार शरीर के लिए आलस्य हानिप्रद होता है, अतएव आलस्य छोड़ने के लिए अधिक परिश्रम करके उद्यत रहना चाहिए।

आलस्यवश ही पुत्र माता-पिता की सेवा का सौभाग्य खो देता है, पत्नी पतिसेवारूपी पुण्य को खो देती है। आलस्य के कारण संतान रोगी और निर्बल होती है।

बुद्धिमान और सौभाग्यशाली वही है जो विद्योपार्जन में आलस्य न करे । बड़ों के तथा दीन-दुःखियों के आतिथ्य और रोगी की सेवा-सहायता में आलस्य न करे । जिस वस्तु की अभी आवश्यकता है उसे लाने और लायी हुई वस्तु को यथास्थान पहुँचाने में भी आलस्य न करे। शुभ प्रतिज्ञा करे एवं जो प्रतिज्ञा कर ली है उसको पूरा करने में आलस्य न करे । अपनी दैनिक, शारीरिक, मानसिक शुद्धि क्रियाओं में आलस्य न करे। आलस्य बहुत ही अनर्थकारी रोग है। आलस्य के त्याग में भी आलस्य नहीं करना चाहिए। □

उत्तम साधन

(पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)

जब सब ब्रह्म है तो आप पूछोगे कि 'कृष्ण के साकार रूप की उपासना करें कि निराकार की करें ? वह घोड़े की बागडोर लिये हुए काला-कलूटा कृष्ण-कन्हैया बैठा है, उसको ही भगवान मानें कि उसके अंदर जो आत्मा है उसको भगवान मानें ?'

भाई ! जिसमें तेरी प्रीति हो। तेरे पास गोपी और ग्वाल का हृदय है तो बाल-गोपाल मान ले अथवा मुरलीधर या गीतागायक आचार्य महोदय श्रीकृष्ण मान ले।

'आहा ! कृष्ण कन्हैया !...' तो कन्हैयाकार, कृष्णाकार वृत्ति होगी और जगदाकार वृत्ति टूट जायेगी। इस वृत्ति में आनंद आने लगेगा, तुम अंतर्मुख होने लगोगे, धीरे-धीरे निराकार भी छलकने लगेगा, एक ही बात है।

अर्जुन का प्रश्न था : 'जो भक्त निरंतर आपकी उपासना करते हैं और जो अक्षर अव्यक्त की उपासना करते हैं, उन दोनों में उत्तम योगवेत्ता कौन है ?'

भगवान का जवाब था : 'जो परम श्रद्धालु नित्ययुक्त रहकर मुझमें अपना मन आविष्ट कर देते हैं और मेरी उपासना करते हैं, वे मेरे मत में उत्तम योगवेत्ता हैं।'

महाराज ! आप साइकिल पर जा रहे हैं तो १५ कि.मी. प्रति घंटा की रफ्तार बहुत उत्तम है, कार में जा रहे हैं तो ६० कि.मी. की रफ्तार उत्तम है और जहाज में जा रहे हैं तो कम-से-कम २५० की रफ्तार उत्तम है और यदि पैदल ही जा रहे हैं तो आपकी ५ कि.मी. की रफ्तार उत्तम है। आप कौन-से साधन से जा रहे हैं ?

आपके पास चित्त, वातावरण, समझ - जो है पर्याप्त है। धन्ना जाट जैसा आदमी भी तो प्रभु को मिल सकता है, शबरी भीलन जैसी भी तो मिल सकती है, गोरा कुम्हार भी तो मुलाकात कर सकता है। ध्रुव का 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' साधन था और धन्ना जाट का 'नहाके नहलइयो, खिलाकर खइयो।' 'अब तू खाता नहीं ? आता है कि नहीं आता है, आता है कि नहीं आता है...' - यह साधन था, लो। तुम ऐसा करोगे तो मजा नहीं आयेगा।

शबरी का ऐसा चिंतन था कि बाहर की भूख, प्यास, सर्दी, गर्मी उसको कोई असर नहीं करती क्योंकि सतत चिंतन में ऐसी हो गयी थी कि बाहर की कोई भी प्रतिकूलता, राग-द्वेष का प्रसंग उसके चित्त को बाहर नहीं लाता। उसके लिए यह साधन उत्तम है लेकिन आप यदि शबरी की नकल करने बैठोगे तो मजा नहीं आयेगा। आप श्रीकृष्ण का चिंतन करते हैं कीजिये, अल्लाह का करते हैं कीजिये, झुलेलाल का करते हैं कीजिये और यदि आपके पास सद्गुरु उपलब्ध हैं, आपके पास बुद्धि उपलब्ध है, आपके पास श्रद्धा उपलब्ध है, आपके पास पुण्य हैं तो आप चिंतन कीजिये - '**सच्चिदानन्दोऽहम्, शिवोऽहम्, आनन्दस्वरूपोऽहम्...** गुरु होकर उपदेश दे रहा हूँ। आहाहा ! शिष्य होकर सुन रहा हूँ। वाह ! वाह !! वाह !!!... सब मेरे अनेक-अनेक रूप हैं। कृष्ण होकर मैं आया था, बुद्ध होकर आया, महावीर होकर आया, माई होकर आया, भाई होकर आया... यह शरीर कट जाय, मर जाय फिर भी मेरा नाश नहीं होता क्योंकि अनंत-अनंत शरीरों में मैं हूँ।' वाह, क्या मजा है ! असत्, जड़, दुःख के चिंतन से बचने के लिए आप अपने सत्, चित् आनंद स्वभाव का, परमात्म-स्वभाव का चिंतन करते हुए निश्चिंत नारायण से एकाकार होइये। ब्रह्माकार वृत्ति से आवरण भंग करके ब्रह्मस्वरूप हो जाइये, अपने ब्रह्मस्वभाव को पाइये। ❑

सर्दियों में बल व पुष्टिवर्धक प्रयोग

हितकर आहार-विहार के साथ निम्नलिखित रसायन प्रयोगों का सेवन करने से शरीर पुष्ट व बलवान होता है।

(१) आँवले के १५ से २० मि.ली. रस में २ ग्राम अश्वगंधा चूर्ण मिलाकर सुबह लेने से वीर्य पुष्ट होता है।

(२) काले तिल व गुड़ का लड्डू खूब चबा-चबाकर खाने से दाँत, बाल, हड्डियाँ मजबूत बनती हैं तथा रक्त की वृद्धि होती है।

आयुर्वेद के श्रेष्ठ आचार्य श्री वाग्भट्टजी द्वारा वर्णित कुछ प्रयोग :

(१) मुलेठी का २ ग्राम चूर्ण गाय के दूध में मिलाकर प्रतिदिन पियें। इससे मस्तिष्क की धारणाशक्ति बढ़ती है।

(२) २ ग्राम सोंठ में पानी मिलाकर रात को लोहे की कड़ाही के अंदर लेप करें। प्रातःकाल वह सोंठ दूध में मिलाकर पीने से दीर्घायुष्य की प्राप्ति होती है।

(३) हितकर आहार का सेवन करते हुए आँवले का रस, गाय का घी, शहद व मिश्री समभाग मिलाकर पाचनशक्ति के अनुसार प्रतिदिन प्रातः सेवन करने से वार्धक्यजन्य विकार नष्ट हो जाते हैं।

(४) १० से १५ ग्राम काले तिलों को भलीभाँति चबाकर शीतल (सामान्य) जल पीने से शरीर पुष्ट होता है तथा दाँत मृत्यु तक सुदृढ़ बने रहते हैं। इस प्रयोग के बाद २ घंटे तक कुछ न खायें-पियें। (**नोट** : वाग्भट्टाचार्यजी ने शास्त्र में तिल सेवन की मात्रा चार तोला (४५ ग्राम) लिखी है, जो उस युग के अनुरूप है।)

अन्य प्रयोग :

अस्थिरोग : जिनकी अस्थियाँ जकड़ गयी हों, टूट गयी हों, टेढ़ी-मेढ़ी हो गयी हों अथवा जिनकी अस्थियों में पीड़ा होती हो, उनके लिए शीत ऋतु में लहसुन का उचित मात्रा में सेवन बहुत लाभदायी है। लहसुन के छिलके उतारकर रात को खट्टी छाछ में भिगोकर रखें। सुबह धोके पीसकर रस निकालें। एक से चार ग्राम रस में उतना ही तिल का तेल अथवा घी मिलाकर पियें। आहार सात्त्विक, सुपाच्य लें।

सावधानी : लहसुन तामसी होने के कारण रुग्णावस्था में भी इसका सेवन औषधवत् करना चाहिए।

वातव्याधि : १०-१५ तुलसी के पत्ते, १ या २ काली मिर्च व १०-१५ ग्राम गाय का घी मिलाकर खाने से वातव्याधि में लाभ होता है।

खाँसी : आधा चम्मच तुलसी का रस और उतना ही अदरक का रस मिलाकर लेने से लाभ होता है।

अश्विनी मुद्रा

अश्विनी मुद्रा अर्थात् जैसे घोड़ा लीद छोड़ते समय गुदा का आकुंचन-प्रसरण करता है, वैसे गुदाद्वार का आकुंचन-प्रसरण करना। श्वास बाहर निकालकर बाहर ही रोके रखें और कम-से-कम १०० बार अश्विनी मुद्रा करें। इससे स्वप्नदोष, बवासीर में लाभ होता है और कुंडलिनी जाग्रत करने में मदद मिलती है। अश्विनी मुद्रा से मूलाधार व स्वाधिष्ठान चक्र विकसित होते हैं। इससे बुद्धि

सर्दियों में बल व पुष्टिवर्धक प्रयोग

हितकर आहार-विहार के साथ निम्नलिखित रसायन प्रयोगों का सेवन करने से शरीर पुष्ट व बलवान होता है।

(१) आँवले के १५ से २० मि.ली. रस में २ ग्राम अश्वगंधा चूर्ण मिलाकर सुबह लेने से वीर्य पुष्ट होता है।

(२) काले तिल व गुड़ का लड्डू खूब चबा-चबाकर खाने से दाँत, बाल, हड्डियाँ मजबूत बनती हैं तथा रक्त की वृद्धि होती है।

आयुर्वेद के श्रेष्ठ आचार्य श्री वाग्भट्टजी द्वारा वर्णित कुछ प्रयोग :

(१) मुलेठी का २ ग्राम चूर्ण गाय के दूध में मिलाकर प्रतिदिन पियें। इससे मस्तिष्क की धारणाशक्ति बढ़ती है।

(२) २ ग्राम सोंठ में पानी मिलाकर रात को लोहे की कड़ाही के अंदर लेप करें। प्रातःकाल वह सोंठ दूध में मिलाकर पीने से दीर्घायुष्य की प्राप्ति होती है।

(३) हितकर आहार का सेवन करते हुए आँवले का रस, गाय का घी, शहद व मिश्री समभाग मिलाकर पाचनशक्ति के अनुसार प्रतिदिन प्रातः सेवन करने से वार्धक्यजन्य विकार नष्ट हो जाते हैं।

(४) १० से १५ ग्राम काले तिलों को भलीभाँति चबाकर शीतल (सामान्य) जल पीने से शरीर पुष्ट होता है तथा दाँत मृत्यु तक सुदृढ़ बने रहते हैं। इस प्रयोग के बाद २ घंटे तक कुछ न खायें-पियें। (**नोट** : वाग्भट्टाचार्यजी ने शास्त्र में तिल सेवन की मात्रा चार तोला (४५ ग्राम) लिखी है, जो उस युग के अनुरूप है।)

अन्य प्रयोग :

अस्थिरोग : जिनकी अस्थियाँ जकड़ गयी हों, टूट गयी हों, टेढ़ी-मेढ़ी हो गयी हों अथवा जिनकी अस्थियों में पीड़ा होती हो, उनके लिए शीत ऋतु में लहसुन का उचित मात्रा में सेवन बहुत लाभदायी है। लहसुन के छिलके उतारकर रात को खट्टी छाछ में भिगोकर रखें। सुबह धोके पीसकर रस निकालें। एक से चार ग्राम रस में उतना ही तिल का तेल अथवा घी मिलाकर पियें। आहार सात्त्विक, सुपाच्य लें।

सावधानी : लहसुन तामसी होने के कारण रुग्णावस्था में भी इसका सेवन औषधवत् करना चाहिए।

वातव्याधि : १०-१५ तुलसी के पत्ते, १ या २ काली मिर्च व १०-१५ ग्राम गाय का घी मिलाकर खाने से वातव्याधि में लाभ होता है।

खाँसी : आधा चम्मच तुलसी का रस और उतना ही अदरक का रस मिलाकर लेने से लाभ होता है।

अश्विनी मुद्रा

अश्विनी मुद्रा अर्थात् जैसे घोड़ा लीद छोड़ते समय गुदा का आकुंचन-प्रसरण करता है, वैसे गुदाद्वार का आकुंचन-प्रसरण करना। श्वास बाहर निकालकर बाहर ही रोके रखें और कम-से-कम १०० बार अश्विनी मुद्रा करें। इससे स्वप्नदोष, बवासीर में लाभ होता है और कुंडलिनी जाग्रत करने में मदद मिलती है। अश्विनी मुद्रा से मूलाधार व स्वाधिष्ठान चक्र विकसित होते हैं। इससे बुद्धि

व प्रभावशाली व्यक्तित्व के विकास में बड़ा सहयोग मिलता है। **लेटे-लेटे ५०-६० बार यह मुद्रा करने से वात-पित्त-कफ इन त्रिदोषों का शमन होता है, भूख खुलकर लगती है।**

तृप्ति प्राणायाम

पूरा श्वास भरकर उसे अंदर रोके बिना पूरी तरह बाहर निकालना यह 'तृप्ति प्राणायाम' कहलाता है। च्यवन ऋषि ने इसकी खोज की थी। चिंता, तनाव एवं थकान महसूस होने पर इसे २०-२५ बार करने से ये सभी दूर होकर तृप्ति का अनुभव होता है। चिंता-तनाव न होने पर भी इसे किया जा सकता है।

पद्मासन, सिद्धासन या सुखासन में बैठ जायें। श्वास भीतर भरते समय भावना करें कि हम निश्चिंतता, आनंद, शांति भीतर भर रहे हैं तथा मुँह से फूँक मारते हुए श्वास बाहर छोड़ते समय भावना करें कि हम चिंता, तनाव, हताशा, निराशा को बाहर निकाल रहे हैं। श्वास लेते व छोड़ते समय गुरुमंत्र या भगवन्नाम का मानसिक जप करें। इस विधि से किया गया प्राणायाम विशेष लाभदायी सिद्ध होगा।

सावधानी : भोजन के तुरंत बाद इसका अभ्यास न करें।

अनुभूत प्रयोग : रेशम जैसे बाल

बालों को पानी से गीला करके फिर उन पर गोझरण अर्क मलकर स्नान करें अथवा बालों को ठंडे पानी से धो दें। इससे बाल रेशम जैसे होने लगते हैं। केमिकलयुक्त दवाई लगाने से बालों की कोमलता थोड़े दिन रहती है लेकिन बाद में केमिकलों की हानियाँ (साइड इफेक्ट) तो सहनी पड़ती हैं। गोझरण अर्क से बालों की जुएँ भी पूर्णरूप से गायब हो जाती हैं। यह एक सफल प्रयोग है। □

युवाओं के लिए

परम पूज्य संत श्री आसारामजी बापू द्वारा प्रेरित 'युवा सेवा संघ'

पूज्य बापूजी के पावन सान्निध्य में आकर असंख्य लोगों ने अपने जीवन में आश्चर्यजनक उन्नति की है। अपने विभिन्न सत्कार्यों द्वारा समाज-उत्थान को तीव्र गति देनेवाले पूज्य बापूजी की पावन प्रेरणा से युवाओं के सर्वांगीण विकास हेतु 'युवा सेवा संघ' की नींव रखी गयी है। इसकी स्थापना व शुभारम्भ पूज्य बापूजी द्वारा २० सितम्बर २००९ अर्थात् आत्मसाक्षात्कार दिवस के पावन अवसर पर किया गया। कार्यक्रम के दौरान सैकड़ों युवकों ने 'युवा सेवा संघ' की सदस्यता ग्रहण की और यह सिलसिला पूज्यश्री के सत्संग-कार्यक्रमों में जारी है। पूज्य बापूजी के दिव्य आध्यात्मिक मार्गदर्शन का लाभ लेने के इच्छुक युवक इसकी सदस्यता अवश्य ग्रहण करें। सदस्यता हेतु उम्र-मर्यादा : १६ से ३५ वर्ष।

सम्पूर्ण भारत भर में **'युवा सेवा संघ मार्गदर्शिका'** के अनुसार क्षेत्रीय स्तर (ग्राम/शहर) पर 'युवा सेवा संघों' का गठन किया जा रहा है। पूज्यश्री से मंत्रदीक्षित उत्साही युवक अपने-अपने क्षेत्रों में 'युवा सेवा संघ' का गठन करें।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

युवा सेवा संघ मुख्यालय
अखिल भारतीय श्री योग वेदांत सेवा समिति,
संत श्री आसारामजी आश्रम, अमदावाद-5.
फोन : (079) 27505010-11.
e-mail : yss_sewa@yahoo.com

इहलोक सुखी, परलोक सुखी

मैं मीडिया इंडस्ट्री में काम करता था। सन् २००१ में मीडिया इंडस्ट्री में काफी मंदी आयी और मुझे अपनी महीने की आय का भी ठिकाना न रहा, काफी लाचारी की स्थिति हो गयी।

सन् २००२ में कोलकाता में पूज्य बापूजी के सत्संग का आयोजन हुआ। मैं टहलते-टहलते सत्संग-स्थल पर पहुँच गया। वहाँ मुझे पहली बार बापूजी के दर्शन-सत्संग का लाभ मिला। दूसरे ही दिन मुझे बापूजी से मंत्रदीक्षा मिल गयी।

दीक्षा के बाद जीवन में बहुत परिवर्तन आया। फिर मैंने ४० दिन का मंत्र-अनुष्ठान किया। अनुष्ठान के कमरे में मैं धूप-अगरबत्ती कुछ नहीं जलाता था, सिर्फ बापूजी का ध्यान करके मंत्रजप करता था। करीब तीसरे दिन मेरे कमरे में कहीं से चंदन व धूप की सुगंध आने लगी। मैंने बाहर निकलकर देखा पर कहीं भी चंदन या धूप का प्रयोग होते नहीं पाया। वह खुशबू केवल मुझे व मेरी माँ को ही आ रही थी, बाकी जितने लोग वहाँ थे उनमें से किसीको भी खुशबू नहीं आ रही थी। मेरी माँ ने भी बापूजी से दीक्षा ली है।

अनुष्ठान के समय मैंने 'श्री आसारामायण' के १०८ पाठ करने का संकल्प लिया था, वह अभी पूरा भी नहीं हुआ था कि अचानक बजाज कम्पनी से इंटरव्यू हेतु पत्र आया, जबकि मैंने उस कम्पनी में नौकरी के लिए कोई फॉर्म भी नहीं भरा था। इंटरव्यू देने पर मुझे छः लाख की नौकरी मिली। फिर हर साल तरक्की मिलती गयी।

आज मैं रिलायंस लाइफ इंश्योरेंस, कोलकाता में हूँ और ६ साल पहले जो तनख्वाह जीरो पर थी, वही आज ४० लाख रुपये से ऊपर पहुँच चुकी है। पूज्यश्री से दीक्षा लेने के बाद मुझे जो आनंद और शक्ति मिली है, वह पूरी जिंदगी में नहीं मिली थी।

– राजीव सिंह भदौरिया, कोलकाता।

***

दीक्षा से मिली नेत्रज्योति

मेरा नाम लवकुश चौहान है। मैंने पूज्य बापूजी से लखनऊ में सन् १९९७ में दीक्षा ली थी। मेरा लड़का जब ढाई साल का हुआ तभी अचानक उसके नेत्रों की ज्योति नहीं के बराबर रह गयी थी। काफी इलाज कराने के बाद डाक्टरों ने ऑपरेशन की सलाह दी। **ऑपरेशन भी कराया लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ।** तीन-चार साल तक बच्चे को बहुत कम अर्थात् नहींवत् दिखता रहा। जून २००९ में जब बापूजी लखनऊ पधारे तब मैंने बच्चे को बापूजी से दीक्षा दिलायी। दीक्षा के बाद बच्चे को अच्छी तरह दिखाई देने लगा। कहाँ तो पहले सामने पाँच फीट दूर खड़े व्यक्ति को भी नहीं पहचान पाता था और दीक्षा के बाद चाँद भी स्पष्ट देखने में कोई परेशानी नहीं होती ! बच्चा अब आराम से पढ़-लिख सकता है। पूज्य बापूजी जैसे सद्गुरु के चरणों में, उनके वचनों में यदि पूर्ण श्रद्धा हो तो बाह्य नेत्र तो क्या आंतरिक नेत्र भी खुल जाते हैं। ऐसे कृपालु गुरुवर को मेरा शत-शत वंदन। **– लवकुश चौहान, लखनऊ।**

मो. : ०९४५०३९५३२६. □

संस्था समाचार

('ऋषि प्रसाद' प्रतिनिधि)

२४ व **२५ सितम्बर** को **लातूर (महा.)** निवासियों ने पूज्यश्री के दर्शन-सत्संग का सौभाग्य पाया। जीवन में भगवत्प्रेम विकसित करने की कुंजी देते हुए पूज्य बापूजी ने कहा : ''जो भगवान को अपना नहीं मानेगा वह दुःखी रहेगा, संसार के बंधनों से नहीं छूटेगा। उसकी भक्ति रंगदायी नहीं होगी, संसार की समस्याएँ उसे ले डूबेंगी। भगवान को अपना मानने से कल्याण होता है, भगवत्प्रेम की प्राप्ति होती है।''

२६ व **२७ सितम्बर** को **हैदराबाद (आं.प्र.)** में पूज्य बापूजी के अमृतवर्षी वचनों से यहाँ के सत्संगियों की ज्ञान-पिपासा शांत हुई। आधुनिकता का जामा पहने ब्रॉड माइंड के नाम पर पाशविक उच्छृंखलता के गर्त में गिरते जा रहे आज के हाई प्रोफाइल समाजवर्ग को देख उन्हें सजग करनेवाले उद्गार पूज्यश्री के करुणापूर्ण हृदय से निकल पड़े : ''ब्रॉड माइंड का मतलब यह नहीं कि जो आया वह खा लिया, जो आया उससे मिल लिया... उसको तो भ्रष्ट माइंड बोलते हैं। ब्रॉड माइंड तो वह है कि उचित खाये, उचित व्यवहार करे लेकिन हृदय में सबके प्रति सद्भाव रखे।''

इस बार **३० सितम्बर** से **३ अक्टूबर** तक शरद पूनम का ध्यान योग शिविर **मथुरा (उ.प्र.)** में आयोजित हुआ। शरद पूर्णिमा की तो अपने-आपमें ही विलक्षण महिमा है, इस पर इसका आयोजन गोपीजनवल्लभ भगवान श्रीकृष्ण की मधुमय नगरी मधुरा अर्थात् मथुरा के यमुनातट पर होने से इसकी शोभा में चार चाँद लग गये।

मथुरा में शरद पूर्णिमा के आयोजन की जानकारी पाकर यहाँ श्रद्धालुओं का सैलाब कुछ इस कदर उमड़ा की मथुरा के इतिहास में यह एक अभूतपूर्व आयोजन रहा। इस शिविर से जुड़े एक रोचक पहलू ने सबको आश्चर्य में डाल दिया। पूज्यश्री ने व्यवस्थापकों को मथुरा में यमुनातट पर शिविर की तैयारी करने की आज्ञा दी थी लेकिन शिविर के कुछ दिन पूर्व ही यमुना का पानी इस कदर बढ़ गया कि तट पूरा पानी से भर गया। संयोजकों-व्यवस्थापकों ने 'तेरी लीला तू ही जाने' कहकर हाथ खड़े कर दिये पर प्रकृति पूज्यश्री के वचनों के आड़े कैसे आ सकती थी ! और देखते-ही-देखते यमुना मैया ने अपने-आपको समेट लिया, मानो पूज्यश्री के आगमन से पूर्व उन्होंने अपना आँचल फैलाकर तट को पवित्र कर दिया हो।

प्रभुप्रेम की विलक्षण बहारों और हरिकीर्तन की मस्ती के बीच शिविर बीतता गया और फिर आयी शरद पूनम की शाम। शाम का सत्र पूरा हुआ कि मेघों से आकाश आच्छादित हो गया और बारिश शुरू हो गयी, फिर भी साधक डटे रहे। उन अधिकारी साधकों के निश्चय को देख मेघों ने अपनी लीला समेट ली, जलवर्षा रुकी और खुले आकाश के नीचे पूनम के चाँद की अमृतवर्षा के बीच बरसने लगी भगवत्कृपा, गुरुकृपा की शक्तिपात वर्षा। एक ओर यमुना का पावन तीर व गगनमंडल से शरदपूर्णिमा का अमृत बरसाते चंद्रदेव... दूसरी ओर अपनी नूरानी निगाहों से ईश्वरीय आनंद, ईश्वरीय शांति का अमृत छलकाते पूर्ण ब्रह्मस्वरूप पूज्य गुरुदेव और अपने हृदय की प्यालियों से इस अमृत का पान करते अधिकारी साधक शिष्यों का अनोखा संगम देख हजारों वर्ष पुरानी भगवान श्रीकृष्ण की मधुर लीला का स्मरण हो आया।

ज्ञान-ध्यान से तृप्त करनेवाली, भगवान के स्वरूप-स्वभाव को उजागर करनेवाली पूज्यश्री की घनगम्भीर वाणी गुंजारित हो रही थी : ''भगवान का स्वरूप है सत्, चित्, आनंद... चिद्घन, विभु, सर्वत्र व्याप्त... भगवान का स्वभाव है भक्तवत्सल। भक्त जिस रूप में, जिस भाव से उन्हें पुकारें... वे कल्पतरु हैं। भगवान का गुण है सुहृदयता। मित्र तो बदले के भाव से हमारी मदद करेगा लेकिन भगवान बदले की भावना से नहीं अपितु वे तो प्राणिमात्र के परम सुहृद परमात्मा हैं। भगवान के स्वरूप का, गुणों का चिंतन करते ही तुरंत मन की ग्लानि, मलीनता, दीनता, हीनता चली जाती है।''

८ अक्टूबर को पूज्यश्री के सत्संग का एक

सत्र **आगरा आश्रम (उ.प्र.)** में आयोजित हुआ। चंद घंटे पहले घोषित हुए इस सत्संग में इतनी बड़ी संख्या में उमड़े आगरावासियों को देख पूज्यश्री भी आश्चर्य व्यक्त करते हुए बोल पड़े : ''तुम आगरावाले क्या अंतर्यामी हो ? क्या तुम्हें पहले से पता था कि बापूजी आनेवाले हैं ?''

९ अक्टूबर को **बरारा, जि. आगरा (उ.प्र.)** के नवनिर्मित आश्रम में यहाँ के ग्रामवासियों को पूज्यश्री के दर्शन-सत्संग का लाभ मिला।

९ अक्टूबर का एक सत्र **ग्वालियर आश्रम (म.प्र.)** के भी नाम रहा। यहाँ के श्रद्धालुओं की उत्साहपूर्ण उपस्थिति ने ग्वालियर में लघु कुंभ के दर्शन करा दिये।

अपने ईश्वरीय स्वभाव को जगाने की कुंजी बताते हुए पूज्यश्री ने कहा : ''ॐकार मंत्र अंतर्यामी परमात्मा के स्वभाव को जागृत करता है। काहे को नीच स्वभाव में रहना ! काम, क्रोध, लोभ, मोह, चिंता, भय, टेन्शन यह नीच स्वभाव है। नीच स्वभाव में रहनेवाला आदमी नीच हो जाता है और ईश्वरीय स्वभाव में रहनेवाला आदमी ईश्वरमय हो जाता है; अब पसंदगी तुम्हारी है।''

१० व ११ अक्टूबर जबलपुर (म.प्र.) : जबलपुरवासियों को लौकिक दिवाली के पहले ही पूज्यश्री के सत्संग-सान्निध्य से आध्यात्मिक दीपावली मनाने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ। पूज्यश्री ने कहा : ''उद्देश्य ऊँचा होगा तो सूझबूझ भी ऊँची हो जायेगी। आपके कदम ऊँचाई की तरफ जायेंगे। 'हम नित्य आत्मा का ज्ञान पायेंगे, प्रीति पायेंगे, सुख पायेंगे और नित्य आत्मा की मुलाकात करने के लिए जियेंगे' - ऐसा उद्देश्य बनाओ तो तुम्हारी हर रोज दिवाली, हर दम दिवाली, हर श्वास दिवाली !''

१२ व १३ अक्टूबर को **दमोह (म.प्र.)** में पूज्यश्री के सत्संग का आयोजन हुआ। बापूजी के निर्देश पर यहाँ के गरीब आदिवासियों के लिए भंडारे का आयोजन किया गया। जिसमें गरीबों को भोजन-प्रसादी के साथ तेल, अनाज, मिठाई, कपड़े, चप्पलें एवं नकद दक्षिणा भी दी गयी।

यहाँ के आदिवासियों की गरीबी की दुखती रग को माध्यम बनाकर ही मिशनरियों द्वारा उन्हें धर्मांतरित किया जाता है। इस पर पूज्यश्री ने कहा : ''मैं तो ईसाइयों को भी प्रेम करता हूँ लेकिन जो दूसरों की मजबूरी का फायदा उठाकर उनको धर्मांतरित करते हैं, उनको तो कहता हूँ कि तुम इस कर्म से बचो। हिन्दुओं को गुमराह मत करो, हिन्दुओं को अपने महान हिन्दू धर्म से नीचे मत गिराओ।''

पूज्य बापूजी ने यह भी कहा कि ''हिन्दू समाज की निगाहें साधु-संतों पर टिकी हैं कि ये हमारे धर्म के प्रहरी हैं। नहीं तो चारों तरफ से हिन्दू समाज को काटने की साजिशें चल रही हैं। कभी साधु-संतों को बदनाम करना तो कभी हिन्दू धर्म की बात नीची दिखाना। कभी हिन्दू धर्म के देवी-देवताओं के चित्र गंदी जगहों पर लगाना, ये सारी गंदी साजिशें चल रही हैं।''

१३ अक्टूबर की शाम को **मझगुवा आश्रम, जि. सागर (म.प्र.)** में एकत्रित श्रद्धालुओं को सत्संग-प्रसाद बाँटते हुए पूज्यश्री गोरा खुर्द पहुँचे, जहाँ गरीबों के लिए मकान-वितरण व भंडारे का आयोजन किया गया था। यहाँ संत श्री आसारामजी आश्रम ट्रस्ट, अमदावाद की ओर से निर्मित ५० मकानों का पूज्य बापूजी के करकमलों द्वारा गरीबों में वितरण किया गया। एक ओर दिवाली के अवसर पर नये पक्के मकान मिलने की खुशी इन दरिद्रनारायणों की आँखों से कृतज्ञता के अश्रु बनकर बह रही थी तो दूसरी ओर इस सेवाकार्य में सहभागी बने साधकों के हृदय अंतरात्मा के आनंद से, उदारता के रस से तर हो रहे थे।

१४ व १५ अक्टूबर (दोपहर तक) **कानपुर (उ.प्र.)** में आयोजित सत्संग में उमड़े जनसैलाब को देख जाहिर हो रहा था कि देश भर की जनता किस कदर बापूजी के दर्शन-सत्संग की प्यासी है। दुनियावालों की दृष्टि में भले ही ऐसे साधक दीवाने लगें लेकिन इनकी ये दीवानगी दुनिया की सारी लौकिक दीवानगियों से मुक्त करानेवाली होती है। पूज्यश्री के उद्गार हैं : ''सब चक्करों से निकलने के लिए

भगवान और महापुरुषों के चक्कर में आना फायदेमंद होता है। काँटे से काँटा निकलता है। चक्कर में आने की आदत है तो फिर महापुरुषों और भगवान के चक्कर में आओ, सारे चक्करों से पार हो जाओगे ! हम भी अपने पूज्य सद्गुरुदेव के चक्कर में आये तो हमें जो लाभ हुआ वह आप सब जानते हैं।''

१५ अक्टूबर की शाम पूज्यश्री के **उदयपुर (राज.)** आश्रम में आगमन से यहाँ के श्रद्धालुओं को मानो दिवाली की सबसे बड़ी सौगात पूज्यश्री के दर्शन-सत्संग के रूप में मिली। भक्ति का मर्म समझाते हुए पूज्यश्री बोले : ''भक्ति क्या है ? **भागो हि भक्तिः।** जो नश्वर और शाश्वत का भाग करके दिखा दे। नित्य सुख और धोखे के सुख का भाग करके दिखा दे। संसार का सुख धोखा है, इससे आसक्ति बढ़ती है। रोग, दीनता, हीनता, पराधीनता, गुलामी, बंधन, टेन्शन, तनाव और नश्वरता - यह जगत का स्वभाव है। स्वाधीनता, सरसता, नित्य नवीन रसता और मुक्ति - यह भगवान का स्वभाव है, भक्ति स्वभाव है।''

दरिद्रता निवारण हेतु

सोमवती अमावस्या के दिन तुलसीजी की १०८ बार परिक्रमा करने से दरिद्रता दूर होती है। १६ नवम्बर २००९ को सोमवती अमावस्या है।

अनोखी दिवाली

दीपावली के उत्सव में जहाँ एक ओर होती है दीपमालाओं की जगमग, पटाखों की आतिशबाजी, मिठाइयों का प्रचलन व नये कपड़ों-उपहारों की सौगात और हास्य उल्लास, वहीं दूसरी ओर होते हैं ऐसे इलाके जहाँ देखने को मिलता था अंधकार, रुदन, निराशा और तरसती आँखें ! पर पूज्य बापूजी व उनके साधकों द्वारा दीपावली के निमित्त किये जा रहे भंडारे व सेवाकार्यों के तेज ने इस अंधकारमय दृश्य को चीरते हुए इन गरीबों के जीवन की निराशा, दीनता, हीनता दूर करने का महानतम कार्य किया है और साथ ही दी है इन्हें नयी उमंग व आध्यात्मिक जीवन जीने की कुंजी। कुछ वर्ष पहले जहाँ परम्परावश मृतकों के लिए किये जानेवाले रुदन से दीपावली व नये वर्ष की शुरुआत होती थी, वहीं आज भगवन्नाम के पावन उच्चारण से इनके इस दिन की शुरुआत हो रही है और शाम आ रही है नये वस्त्र, मिठाई व नये उपहारों के साथ !

इसी श्रृंखला में इस बार **१३ अक्टूबर** को **दमोह (म.प्र.)** में भंडारा व **गोरा खुर्द, जि. सागर (म.प्र.)** में भंडारे के साथ मकान-वितरण किया गया।

१६ अक्टूबर को **गोगुंदा (राज.)** व **१७ अक्टूबर** को **कोटड़ा (राज.)** के अति गरीब आदिवासियों में भंडारे का आयोजन हुआ।
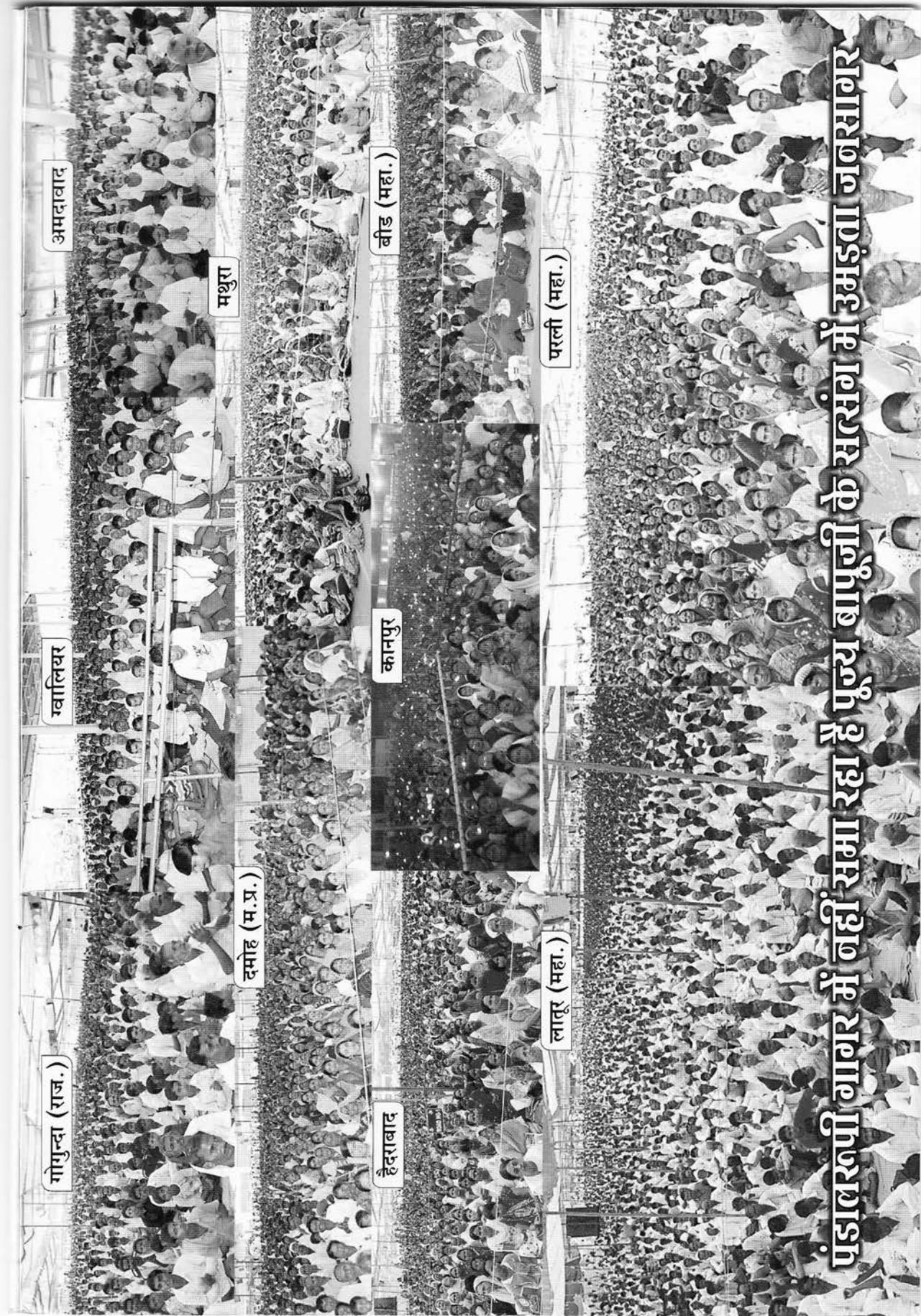
सेवा ही व्यावहारिक भक्ति, व्यावहारिक वेदांत है इस तत्त्व को अपने आचरण से प्रतिपादित करनेवाले वेदांतनिष्ठ लोकसंत पूज्य बापूजी व उनकी इस सीख को जीवन में धारण करनेवाले उनके साधक-साधिकाओं द्वारा इन गरीबों में अनाज, वस्त्र, चप्पल-जूते, मिठाइयाँ, बर्तन, बच्चों के लिए नये कपड़े, बिस्कुट-टोस्ट, पटाखे आदि बाँटे गये तथा चरपरे व मधुर पुलाव और शीरे (हलुए) के भोजन से सभीको तृप्त किया गया; साथ में नकद दक्षिणा भी दी गयी।
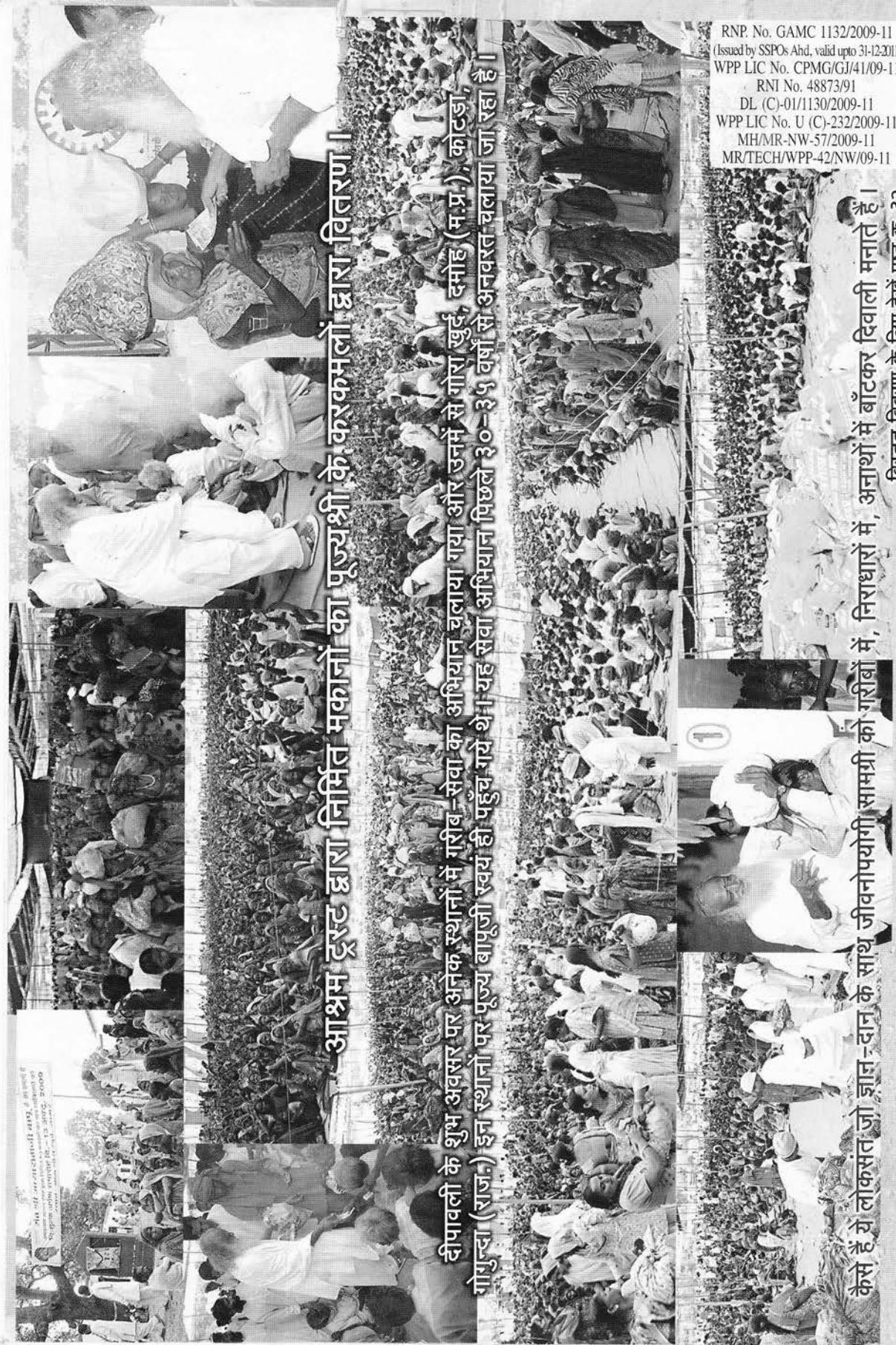
चराचर में व्याप्त श्रीहरि को सेवायज्ञ से संतुष्ट करनेवाली यह अनोखी दिवाली सचमुच सभीके लिए प्रेरक है !

१७ अक्टूबर की रात दीपावली पर्व के पुण्यमय अवसर पर **ईडर (गुज.)** वासियों को पूज्यश्री का सत्संग-सान्निध्य लाभ मिला।

१८ व १९ अक्टूबर अमदावाद (गुज.) में नूतन वर्ष के निमित्त पूज्य बापूजी का दर्शन-सत्संग पाने की आकांक्षा से एकत्रित जनसमुदाय को सत्कर्म, सद्विचार, सर्वहितकारी जीवन जीने की प्रेरणा देते हुए पूज्य बापूजी बोले : ''द्वेष और राग से रहित अगर सत्कर्म कर रहे हैं तो आपके कर्म आपके लिए मोक्षदायी हो जायेंगे, आपके विचार आपके लिए मोक्षदायी हो जायेंगे, आपका जीवन आपके लिए और दूसरों के लिए हितकारी हो जायेगा।'' ❐

गोगुन्दा (राज.)
ग्वालियर
अमदावाद
दमोह (म.प्र.)
मथुरा
हैदराबाद
कानपुर
बीड (महा.)
लातूर (महा.)
परली (महा.)
पंडालरूपी गागर में नहीं समा रहा है पूज्य बापूजी के सत्संग में उमड़ता जनसागर

विस्तृत विवरण के लिए देखें पृष्ठ क्र. ३२

RNP. No. GAMC 1132/2009-11
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2011)
WPP LIC No. CPMG/GJ/41/09-11
RNI No. 48873/91
DL (C)-01/1130/2009-11
WPP LIC No. U (C)-232/2009-11
MH/MR-NW-57/2009-11
MR/TECH/WPP-42/NW/09-11

Posting at PSO Ahmedabad between 25th of preceding month to 10th of current month. * Posting at ND PSO on 5th & 6th of E.M. * Posting at MBI Patrika Channel on 9th & 10th of E.M.